इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

BPSE-141

गाँधी और समसामयिक विश्व

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

प्रो. डी गोपाल (अध्यक्ष)
सामाजिक विज्ञान संकाय
एवं गांधी और शांति अध्ययन केंद्र
के प्रमुख कार्यक्रम समन्वयक
एसओएसएस, इग्नू नई दिल्ली

प्रो. अनुराग जोशी
सामाजिक विज्ञान संकाय
एसओएसएस, इग्नू, मैदान गढ़ी
नई दिल्ली

प्रो. आर पी मिश्र
पूर्व कुलसचिव इलाहाबाद
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रो. एस वी एस रेड्डी
सामाजिक विज्ञान संकाय
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. अनिल दत्त मिश्र
उप निदेशक, गांधी संग्रहालय
नई दिल्ली

प्रो. जगपाल सिंह
सामाजिक विज्ञान संकाय
एसओएसएस, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई
दिल्ली

डॉ. अंशु पसरीचा
अध्यक्षा, गांधी और शांति अध्ययन विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. डी गोपाल एंड प्रो. अनुराग जोशी
सामाजिक विज्ञान संकाय और गांधी एवं शांति अध्ययन केंद्र के प्रमुख एवं अध्यक्ष

संपादक

प्रो. डी गोपाल
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. संजीव कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय जवाहरलाल नेहरु मार्ग, नई दिल्ली

पुनरीक्षण एवं हिंदी अनुवाद : डॉ. महीप एकेडमिक एसोसिएट, गांधी एवं शांति अध्ययन, सामाजिक विज्ञान संकाय, इग्नू, नई दिल्ली

खंड 1	**गाँधीः एक परिचय**	
इकाई 1	गाँधीः जीवन और काल	सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
इकाई 2	गाँधी की आधुनिक सभ्यता और वैकल्पिक आधुनिकता की अवधारणा	डॉ सौरभ, असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली–67 एवं सुरुचि अग्रवाल, रिसर्च स्कॉलर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
इकाई 3	गाँधीः विकास समीक्षक	डॉ पार्थसारथी मंडल, एसोसिएट प्रोफेसर, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज, मुंबई–88 और सुरुचि अग्रवाल, रिसर्च स्कॉलर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
खंड 2	**गाँधी की राजनीतिक चिंतन और विचार**	
इकाई 4	स्वराज	डॉ. सुशीला रामास्वामी, रीडर, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली–29 एवं सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
इकाई 5	स्वदेशी	प्रो बी कृष्णमूर्ति, आचार्य, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी एवं सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
इकाई 6	सत्याग्रह	प्रो बी कृष्णमूर्ति, आचार्य, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी एवं सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
इकाई 7	न्यास	प्रो जे.एन. शर्मा, अध्यक्ष, गांधीवादी अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ एवं सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
खंड 3	**गाँधी की विरासत**	
इकाई 8	गैर–हिंसात्मक आंदोलन	डॉ मनीश रॉय, सहायक प्रोफेसर, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25

इकाई 9	शांति आंदोलन (पेसिफिस्ट मूवमेंट्स)	डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली, रिसर्च एसोशिएट, गांधी स्मृति, 5 तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली
इकाई 10	महिलाओं के आंदोलन	सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
इकाई 11	पर्यावरण आंदोलन	सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25
खंड 4	**गाँधी और समकालीन चुनौतियां**	
इकाई 12	सामाजिक सद्भाव	डॉ. आशु पसरीचाअध्यक्ष, गांधीवादी और शांति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
इकाई 13	शिक्षा	डॉ. आशु पसरीचाअध्यक्ष, गांधीवादी और शांति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
इकाई 14	सदाचार और नैतिकता	सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25

प्रिंट उत्पादन

राजीव गिरधर	श्री हेमन्त परीदा	श्री विजेंद्र (साचिविक सहायता)
उपकुल सचिव, इग्नू, नई दिल्ली	सेक्शन ऑफिसर, इग्नू, नई दिल्ली	स्टैनोग्राफर, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त, 2021

© इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति के बिना इस कार्य का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में, मिमियोग्राफ या किसी अन्य माध्यम से पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से प्राप्त की जा सकती है

निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की ओर से मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाईपसेट : टेसा मीडिया, और कम्प्यूटर्स, सी-206, एएफई II ओखला, नई दिल्ली

मुद्रित :

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

	पृष्ठ सं.
खंड 1 गाँधीःएक परिचय	**15**
इकाई 1 गाँधीः जीवन और काल	17
इकाई 2 गाँधी की आधुनिक सभ्यता और वैकल्पिक आधुनिकता की अवधारणा	32
इकाई 3 गाँधीः विकास समीक्षक	41
खंड 2 गाँधी की राजनीतिक चिंतन और विचार	**51**
इकाई 4 स्वराज	53
इकाई 5 स्वदेशी	61
इकाई 6 सत्याग्रह	70
इकाई 7 न्यास (ट्रस्टीशिप)	80
खंड 3 गाँधी की विरासत	**89**
इकाई 8 गैर-हिंसात्मक आंदोलन	91
इकाई 9 शांति आंदोलन (पेसिफिस्ट मूवमेंट्स)	101
इकाई 10 महिलाओं के आंदोलन	110
इकाई 11 पर्यावरण आंदोलन	122
खंड 4 गाँधी और समकालीन चुनौतियां	**135**
इकाई 12 सामाजिक सद्भाव	137
इकाई 13 शिक्षा	152
इकाई 14 सदाचार और नैतिकता	166
संदर्भग्रंथ सूची	**175**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

प्रस्तावनाः गांधी और समकालीन विश्व

समकालीन वैश्विक चुनौतियों के मद्देनजर गांधी जी के मुख्य कार्यों और विचारों को समीक्षात्मक रूप में प्रस्तुत करने की तीव्र इच्छा ने "गांधी और समकालीन विश्व" के पाठ्यक्रम का संपादित अंक तैयार करने की भूमिका तैयार की। मौजूदा अंक समकालीन भारत में गांधी के विचारों की प्रासंगिकता और प्रभाव को हरसंभव रूप में तलाशने की कोशिश करता है। महात्मा के अवसान को अब सात दशक होने को आए। अब जबकि हम प्रगति की नई ऊंचाइयां छू रहे हैं ऐसे में गांधी जी की भावना और मानवीय स्पर्श को फिर से जगाने की बहुत जरूरत है।

नीचे गाँधी पर इस पाठ्यक्रम, इसकी संरचना और उद्देश्यों के बारे में एक प्रस्तावना दी गई है:

गांधी जी ने जो कहा, जिस पर उन्होंने विश्वास किया और जो उन्होंने किया उसमें नया कुछ भी नहीं था। उन्होंने एक बार खुद ये स्वीकार किया था जब उन्होंने ये कहा था कि "लोगों को सिखाने के लिए उनके पास कुछ भी नया नहीं है। सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं जितनी कि ये पहाड़ियां" (गांधी 1936: 49)। लेकिन गांधी जी का कमाल ये था कि उन्होंने इन विचारों को जिस रूप में पेश किया वैसा पहले किसी ने भी नहीं किया था। उन्होंने समय की आवश्यकता के मुताबिक इन विचारों को नयी व्याख्या दी और इन्हें विश्व में मौजूद संकटों को समाधान के लिए अनुरूप बनाया। ये विचार अब मानव की नियति को निर्धारित करने वाले मुख्य उपकरण बन चुके हैं।

महात्मा गांधी ने जीवन के विभिन्न पहलुओं राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक आदि पर बड़े पैमाने पर साहित्य की रचना की। गांधी जी का लेखन सात पुस्तकों में संग्रहित है। इसके अलावा उन्होंने साप्ताहिक पत्रिकाओं में लेखों और निबंधों और संपादकीय के रूप में भी अनगिनत रचनाएं दीं। ये वे पत्रिकाएं थीं जिनका संपादन उन्होंने अपने जीवन के अलग अलग कालखंड में किया। गांधी जी के सात पुस्तकों में शामिल हैं हिन्द स्वराज, दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, आत्मकथा, सकारात्मक कार्यक्रम असका अर्थ और स्थान, गीता के उपदेश, आश्रम के रीति रिवाजों का पालन, स्वास्थ्य निर्देशिका जिनका प्रकाशन नवजीवन, अहमदाबाद ने किया था। महात्मा गांधी की संग्रहित रचनाओं (CWMG) का प्रकाशन भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने किया था जिसके एक सौ से ज्यादा अंक प्रकाशित हो चुके हैं। गांधी द्वारा संपादित पत्रिकाओं और साप्ताहिकों में इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया और हरिजन इंडिया प्रमुख हैं।

बड़े पैमाने पर लेखन के अलावा गांधी जी ने भारत में अंग्रेज शासन और दक्षिण अफ्रीका में अपनी प्रवास के दौरान राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जो हस्तक्षेप किये वो सत्य और अहिंसा, प्रेम और सहानुभूति, नैतिकता, साहस, सरलता और ईमानदारी के प्रति उनकी आस्था को प्रतिबिंबित करता है। सामाजिक न्याय, नियामक अर्थशास्त्र, धार्मिक बहुलवाद और प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए अनवरत प्रयास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आज के संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण है और मानवता उनके विवेक से काफी कुछ प्राप्त कर सकती है जो उनके कार्य का आधार रहा।

गांधी जी के प्रति अपने दृष्टकोण को हम समकालीन विश्व के साथ कैसे जोड़ सकते हैं? गांधी जी की श्रेष्ठता अचानक नहीं थी। उन्होंने सख्त आत्मानुशासन और सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के जरिये इसे हासिल किया था। ये सिद्धांत गांधी जी के दर्शन और उनके कार्य के मुख्य स्तंभ थे। दक्षिण अफ्रीका में एक युवा संघर्षशील वकील से लेकर महात्मा तक गांधी जी के उत्थान का श्रेय उनके चार

सिद्धांतों को दिया जा सकता है जिनके प्रति गांधी जी सदा समर्पित रहे और उन्हें जीवन में अपने आचरण का हिस्सा बना लिया।

गांधी जी का संघर्ष भारत में शुरू नहीं हुआ था। यह कई वर्षों पहले दक्षिण अफ्रीका में शुरू हुआ था जहां वह 21 वर्षों तक रहे और सामाजिक न्याय और नस्लवाद के खिलाफ दमित समुदाय के सम्मान के लिए संघर्ष किया। दक्षिण अफ्रीका ने ना सिर्फ गांधी जी को राजनीतिक संघर्ष के लिए सत्याग्रह जैसे अनोखे उपाय के प्रयोग के लिए प्रेरित किया बल्कि उन्हें एक आम आदमी से 'महात्मा' बना दिया जिसे हम आज जानते हैं। राजनीतिक परिदृश्य में गांधी जी के अवतरण के पहले विश्व बदलाव के जिन तरीकों को जानता था, वे थे गोली और मत पत्र। एक बार स्वर्गीय डा. भीम राव अंबेडकर ने कहा था जो हमारे संविधान के निर्माता थे, ना तो सिर्फ सिरों की गिनती करके और ना ही सिरों को कलम करके आप राजनीतिक बदलाव ला सकते हैं। यह इस तथ्य का संज्ञान लेकर ही संभव है कि सिरों और ह्रदयों के अंदर क्या चल रहा है, तभी आप परिवर्तन के प्रति प्रेरणा को सशक्त करने में सफल होंगे। इसी में गांधी जी का विश्वास था।

गांधी जी के विचारों के मूल में उनकी 'स्वराज' की अवधारणा थी। गांधी जी ने स्वराज को सिर्फ स्वतंत्रता प्राप्ति से अलग माना। इसका अर्थ था हर व्यक्ति के नैतिक दृष्टिकोण में मौलिक परिवर्तन के जरिये भारत की आध्यात्मिक स्वतंत्रता। इसके लिए स्वयं को सख्ती से नये रूप में ढालने और जिम्मेदारी की उत्कट भावना की जरूरत थी। इस प्रकार उन्होंने सकारात्मक कार्यक्रम अपनाने का सुझाव दिया। सकारात्मक कार्यक्रम के अनुसरण के जरिये गांधी जी पूर्ण स्वराज का ढांचा तैयार करना चाहते थे।

दिसंबर, 1941 में गांधी जी ने 'सकारात्मक कार्यक्रम रू इसका अर्थ और स्थान' नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित की। इस पुस्तिका में उन्होंने उन गतिविधियों का ठोस रूप में उल्लेख किया जिन्हें वे सकारात्मक कार्यक्रम में शामिल कराना चाहते थे। गांधी जी के सकारात्मक कार्यक्रम में 18 विषय शामिल थे। ये विषय थे संप्रदायगत एकता, अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध, खादी, ग्रामोद्योग, ग्राम स्वच्छता, मौलिक शिक्षा, वयस्क शिक्षा, महिला, स्वास्थ्य और स्वच्छता, प्रांतीय भाषाएं, राष्ट्रीय भाषा, आर्थिक समानता, किसान, श्रम, आदिवासी, कुष्ठ रोगी और विद्यार्थी (1941: 1-28)।

गांधी जी ने 1940 के दशक के पूर्वार्द्ध में इस पुस्तिका की रचना तब की जब भारत के भविष्य को लेकर उनकी चिंता इस वजह से बढ़ने लगी थी क्योंकि उन्हें ये लगने लगा था कि अगर नयी शासन व्यवस्था में अंग्रेज शाही शासन की आधुनिकतावादी और साम्राज्यवादी नीतियां जारी रहीं तो ज्यादातर भारतीय साधनविहीन और अधिकारविहीन रह जायेंगे। कई अर्थों में सकारात्मक कार्यक्रम राज्य के दायरे के बाहर के हाशिये पर मौजूद एक बड़ी आबादी के सशक्तीकरण की सीधी कार्यवाही में एक महत्वपूर्ण योगदान था।

गांधी जी जिन विषयों को लेकर चिंतित थे वे आज भी महत्वपूर्ण हैं और नयी चुनौतियों के रूप में सामने आ रहे हैं। जो घटनाएं घट रही हैं जैसे वैश्विक आतंकवाद का बढ़ता असर, विश्व में बड़े पैमाने पर लोगों का पलायन, पर्यावरण असंतुलन, सदाचार, आध्यात्मिक और नैतिक विचारों का तीव्र पतन, बढ़ती असहिष्णुता और विश्व भर में टकराव और हिंसा ने आने वाले वर्षों में मानवता के भविष्य को लेकर चिंता बढ़ा दी है। ये बड़ा ही आश्चर्यजनक है कि इन परिस्थितियों में गांधी जी के बारे में सोचने और समकालीन संकटों से निपटने के लिए उनके नैतिक और राजनीतिक सिद्धांतों का पालन करने की जरूरत महसूस होने लगी है। अगले कुछ अनुच्छेदों में मैं उन विषयों का संक्षेप में उल्लेख करूंगा जो आज की बड़ी चिंताएं हैं और जहां गांधी जी के सिद्धांतों के तहत हस्तक्षेप तत्काल आवश्यक है। इनमें शामिल हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

शांति और अहिंसा

आज हम गहन अशांति के दौर में जी रहे हैं। भूमंडलीकरण की तीव्र गति और बढ़ती धार्मिक कट्टरता, धर्मांधता और आतंकवाद की वजह से प्रतियोगता बढ़ती जा रही है जिसकी वजह से हिंसा एक व्यवहारिक सिद्धांत बन गया है। इन सारे घटनाक्रमों ने अहिंसा के प्रति निष्ठा को चुनौतिपूर्ण और कठिन बना दिया है लेकिन इसने इसकी प्राथमिकता को खास तौर पर महत्वपूर्ण और जरूरी बना दिया है।

गांधी जी मानव इतिहास के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अहिंसा के सिद्धांत को सामाजिक और राजनीतिक आधार प्रदान किया। अपनी मौलिक रचना हिन्द स्वराज में गांधी जी ने अहिंसा की अवधारणा की स्पष्ट व्याख्या की है जहां उन्होंने हिंसा पर अहिंसा की नैतिक श्रेष्ठता को तुलनात्मक तरीके से स्थापित किया है। गांधी जी ने सबसे पहले अहिंसा का प्रयोग किया। यह प्रतिरोध और विरोध का एक ऐसा अनोखा प्रयोग था जिसे गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास के दौरान शुरू किया था और इसे भारत में ब्रिटिश शासन के दमन के विरूद्ध सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया। यह चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद में गांधी जी के अभियानों के दौरान शुरू हुआ और बाद में इसका उपयोग अहयोग आंदोलन और नागरिक अवज्ञा आंदोलन के दौरान किया गया जिसने ब्रिटिश शासन को अचंभित कर दिया और अंग्रेज शासन का खात्मा सुनिश्चित कर दिया।

अहिंसा का उपयोग सफलतापूर्वक नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का विरकोध करने के लिए और मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में किया था। इसने फिलीपीन्स, पोलैंड, म्यांमार और चेकोस्लोवाकिया जैसे देशों के आंदोलनों और नेताओं को प्रेरित किया। अब्दुल गफ्फार खान और वाक्लाव, आंग सांग सू की, दलाई लामा और अन्य शीर्षस्थ हस्तियों ने सभी के लिए समानता और न्याय को बढ़ावा देने के लिए गांधी का मार्ग चुना। दुनिया भर में गांधी जी के शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के तरीके को नागरिक अधिकार अभियान के संचालकों, पर्यावरण और शांति कार्यकर्ताओं और ग्रीन पार्टी के कार्यकर्ताओं ने इस्तेमाल किया और इसे नया अर्थ दिया। वर्ष 2011 के शुरूआत में अरब औकर 2011 में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के दौरान गांधी जी के अहिंसा के प्रभाव और प्रासंगिकता को महसूस किया गया।

अहिंसा की नीति

गांधी जी की अहिंसा किसी को पूरी तरह स्वतंत्र कर सकती है अगर कोई इसकी मूल धारणा को सही रूप में समझने की कोशिश करे। गांधी जी की अहिंसा हिंसा के उपयोग को नकारती है और इसके मूल में दूसरे लोगों के प्रति परोपकार और सहानुभूति शामिल है। गांधी जी का तरीका हिंसा का सहारा लिये बगैर और नफरत और बदले की उस भावना से अलग अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की राह प्रदर्शित करता है जो आम तौर पर किसी भी सशस्त्र टकराव का हिस्सा बन जाता है।

गांधी जी के लिए सत्य और अहिंसा अलग अलग नहीं है और अहिंसा के प्रयोग के लिए सत्य का सहारा जरूरी है। गांधी जी का मानना था कि कोई भी व्यक्ति अहिंसा का पालन करके ही सत्य और ईश्वर को महसूस कर सकता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अहिंसा के प्रयोग में सत्य का अहसास जरूरी है। गांधी जी ने लिखा था अहिंसा "मेरे विश्वास का पहला अध्याय है"। यह मेरे सिद्धांत का आखिरी अध्याय भी है (यंग इंडिया मार्च 23:1992)। गांधी जी ने अहिंसा की आम धारणा जैसे किसी को चोट नहीं पहुंचाना या शारीरिक रूप से क्षति नहीं पहुंचाना से अलग इसके प्रयोग का विस्तार किया जिसके कई अलग अलग अर्थ निकाले जा सकते हैं।

गांधी जी के दर्शन में अहिंसा का अर्थ किसी को शारीरिक रूप से चोट पहुंचाने से परहेज करना नहीं है बल्कि अहिंसा एक सिद्धांत है जो मनुष्य के विचारों, शब्दों और क्रियाकलापों को निर्देशित करता है। गांधी जी ने लिखा था "अहिंसा महज किसी को हानि नहीं पहुंचाने की नकारात्मक मानसिकता नहीं बल्कि बुरे कार्य में लिप्त लोगों के प्रति भी प्रेम और सद्भावना रखने का सकारात्मक विचार है।" इसमें अहिंसा के अनुयायियों द्वारा किसी जीव को अपने विचारों शब्दों और कार्यों के जरिये चोट नहीं पहुंचाने के उच्च आदर्श के परे जाकर कार्य करना है जो दूसरों और सभी जीवों के प्रति अपने अगाध प्रेम प्रदर्शित करे। (गांधी, सेलेक्टेड वर्क्स अंक VI: 153)।

विभिन्न कालखंडों में गांधी जी की अहिंसा के प्रयोग पर विचार करें तो इस पर विभिन्न धार्मिक परंपराओं और व्यक्तियो के प्रभावों को देखा जा सकता है। गांधी जी ने विश्व के कई प्रमुख धर्मों का अध्ययन किया था जैसे हिंदू धर्म की वैदिक परंपरा, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म जैन धर्म और इस्लाम धर्म का। वह प्लेटो, टॉलस्टाय, थोरो, इमर्सन और जॉन रस्किन से भी खासे प्रभावित थे जिन्होंने अहिंसा के प्रति उनकी संपूर्ण और मानवीय समझ निर्मित करने में काफी योगदान दिया था। साहस, निडरता, सहिष्णुता और त्याग के प्रति तत्परता उनके जीवन यात्रा के अनिवार्य तत्व बन गये।

गांधी जी ने बदलाव लाने के लिए असहयोग, नागरिक अवज्ञा और स्वदेशी के अलावा अहिंसा के प्रयोग में स्वैच्छिक पीड़ा के विचार को भी प्रमुख रूप में शामिल किया। गांधी जी ने कहा था "सक्रिय परिस्थितियों में अहिंसा का अर्थ पीड़ा भोगना है। इसका अर्थ बुरे कार्य में लिप्त की इच्छाओं के समक्ष समर्पण नहीं बल्कि अत्याचारी के इच्छा के विरूद्ध अपनी आत्मा को संपूर्ण रूप में विरोध के लिए प्रस्तुत करना है।

गांधी जी के विचार का मूल मंत्र ये था कि अहिंसा को तब तक महसूस नहीं किया जा सकता जब तक कि आप अपने विरोधी को शांति से सहन नहीं करो। गांधी जी ने एक बार कहा था "अहिंसा की कड़ी परीक्षा उस समय है जब अहिंसा के प्रयोग के दौरान कोई द्वेष शेष ना रहे और अंत में दुश्मन दोस्त में परिणत हो जायें। दक्षिण अफ्रीका में जनरल स्मट्स के साथ मेरा अनुभव यही रहा। वह शुरू में मेरे कटु विरोधी और आलोचक थे। लेकिन आज वो में मेरे गहरे मित्र हैं। अहिंसा के सिद्धांत में विरोधी के प्रति सम्मान और सहानुभूति का भाव, नफरत से मुक्ति और शांति की इच्छा का भाव शामिल है। अहिंसा किसी भी प्रकार के शोषण को पूरी तरह नकारता है। ऐसे समय में जब हिंसा व्यवहार में शामिल हो गयी है और भारत और विश्व में असहिष्णुता बढ़ रही है तब अहिंसा अत्यावश्यक हो गयी है।

धार्मिक बहुलवाद और सांप्रदायिक एकता

धर्मों के बीच संघर्ष 21वीं सदी की मूलभूत चुनौतियों में से एक है। धार्मिक संघर्षों के परिणामस्वरूप हाल के वर्षों में घृणा, हिंसा और पीड़ा की घटनाओं में बढ़ोत्तरी हुई है ।ऐसे समय में जब विभाजनकारी सामाजिक ताकतें सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने पर आमदा हैं सांप्रदायिक एकता पर गांधी का जोर भारत और पूरी दुनिया में समकालीन युग के लिए कई सबक प्रदान करता है।

गांधी धार्मिक बहुलवाद अंतर-धर्म सद्भाव के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध थे। गांधी का दृढ़ विश्वास था कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सांप्रदायिक एकता एक अनिवार्य शर्त है। अपने रचनात्मक कार्यों के तहत वे विभिन्न धर्मों के लोगों से स्वराज प्राप्ति के लिए सांप्रदायिक सद्भाव पर विचार-विमर्श किया करते थे। गांधी द्वारा लिखित पुस्तक "वे टू कम्यूनल हारमोनी" भी विभिन्न धर्मों के बीच सद्भाव के लिए गांधी की चिंता को साबित करती है। गांधी के अनुसार प्रत्येक धर्म "सर्वोच्च सत्य" तक पहुंचने का मार्ग है और वे उन

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

सार्वभौमिक सिद्धांतों की तलाश कर रहे हैं जिसने धर्म को दृढधर्मिता के रूप में परिवर्तित कर दिया है।

गांधी के धार्मिक दर्शन की प्रकृति मानवतावादी है और इसमें सभी लोगों को सम्मान दिया जाता है। गांधी का दृढ़ विश्वास था कि कोई धर्म किसी अन्य धर्म से श्रेष्ठ या कमतर नहीं है। गांधी का जन्म एक हिन्दू परिवार में हुआ था और जीवन भर वे एक धर्मनिष्ठ हिन्दू रहे। हालांकि वे अन्य धर्मों के विचारों से बहुत प्रभावित थे और धर्म के तुलनात्मक अध्ययन में उनकी गहरी रूचि थी। विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच संवाद, धार्मिक बहुलवाद का एक महत्वपूर्ण आयाम था। वे अंतर-आस्था प्रार्थना सभा का आयोजन करते थे जहाँ विभिन्न धर्मों के ग्रंथों को श्रोताओं के मध्य पढ़ा और गाया जाता था।

उनका हिन्दू धर्म सर्व-समावेशी था। उनके शब्दों में :

"यह मुसलमान-विरोधी, ईसाई विरोधी या कोई अन्य धर्म विरोधी नहीं है। यह मुस्लिम समर्थक, ईसाई समर्थक या दुनिया की किसी भी आस्था का समर्थक है। हिन्दू धर्म का वास्तविक मूल्य इस तथ्य में निहित है कि सभी जीवन (न केवल मनुष्य बल्कि सभी संवेदनशील प्राणी) एक हैं अर्थात् सभी जीवन का एक सार्वभौमिक स्रोत है - इसे अल्लाह कहें, गॉड कहें या परमेश्वर। (महात्मा गांधी, संपूर्ण लेख, खंड-58 पेज - 72)"

गांधी के अनुसार प्रत्येक धर्म ईश्वर की एक अद्वितीय दृष्टि को व्यक्त करता है और मानवीय स्थिति की विभिन्न विशेषताओं पर जोर देता है। इसमें आध्यात्मिक एकता को रेखांकित किया जाता है। उन्होंने अनुभव किया कि सच्चा धर्म प्रत्येक मनुष्य के आंतरिक जीवन को शक्ति प्रदान करता है और इसे बेहतर बनाता है।, "यदि हम ईश्वर में केवल बौद्धिक स्तर पर नहीं बल्कि अपने पूरे अस्तित्व के साथ विश्वास करते है तो हम जाति, धर्म, राष्ट्र, संप्रदाय का विभेद किये बगैर पूरी मानव जाति को प्यार करेंगे।" "बार-बार विश्वास करने के बावजूद वे एक सनातनी हिन्दू थे। उन्होंने कहा : हिन्दू धर्म ग्रंथों पर मेरे विश्वास के अंतर्गत मुझे इनके प्रत्येक शब्द या प्रत्येक छंद को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है ये ईश्वर द्वारा प्रेरित है कृकृकृ मैं किसी भी व्यवस्था को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हूँ चाहे इसमें कितनी भी विद्वता क्यों न हो यदि ये तर्क या नैतिक अर्थों के प्रतिकूल है।" उन्होंने आगे कहा, "मैं किसी भी धार्मिक सिद्धांत को अस्वीकार करता हूँ यदि यह तर्क की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है और नैतिक मूल्यों के खिलाफ है।" इस प्रकार गांधी का धर्म तर्कसंगत और नैतिक है जो रूढ़िवादिता और कर्मकांडों पर आधारित नहीं था।

गांधी को सांप्रदायिक विभाजन से गहरा आघात लगा और उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सांप्रदायिक सद्भाव के लिए समर्पित कर दिया। हिन्दू और मुसलमान के बीच शांति और एकता कायम करने के लिए गांधी ने 1919 में उन्हें एक संकल्प लेने को कहा।

"ईश्वर को साक्षी मानकर हम हिन्दू और मुसलमान घोषणा करते हैं कि हम एक दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे जैसे हम एक ही माता-पिता के संतान हैं, हमारे बीच मतभेद का कोई स्थान नहीं होगा, एक का दुःख दूसरे का भी दुःख होगा और प्रत्येक इसे समाप्त करने में दूसरे की मदद करेगा। हम एक-दूसरे के धर्म और धार्मिक भावनाओं को सम्मान देंगे और एक दूसरे की धार्मिक गतिविधियों में अवरोध पैदा नहीं करेंगे। धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा से हम दोनों दूर रहेंगे।"

1920 में उन्होंने लिखा, "मैं आशा करता हूँ कि मुसलमानों के साथ मेरे गठबंधन से तीन लक्ष्यों की प्राप्ति होगी। सत्याग्रह के माध्यम से बाधाओं का सामना करते हुए न्याय प्राप्त करना तथा अन्य सभी उपायों पर इसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध करना, हिन्दुओं के लिए

मुसलमानों की दोस्ती सुनिश्चित करना और इससे आंतरिक शांति को बढ़ावा देना और अंत में अंग्रेजों तथा उनके संविधान के प्रति द्वेष को स्नेह में बदलना जिसकी वजह से कई उपद्रव हुए हैं। (उद्धृत ब्राउन, 1972 : 194) परन्तु इस दौरान वे काफी सतर्क थे कि मुस्लिम इसे अस्थायी राजनीतिक उपाय के रूप में व्याख्या न करें। उन्होंने कहा, "एकता ऐसी नीति नहीं होनी चाहिए जब हमें यह उपयुक्त न लगे, हम इसका त्याग कर दें। हम इसका परित्याग तभी कर सकते हैं जब हम स्वराज से थक गए हों। हिन्दू-मुस्लिम एकता सभी समय में और सभी परिस्थितियों में बनी रहनी चाहिए। (यंग इंडिया, दिसंबर 2, 1920)।"

1946 में जब सांप्रदायिक दंगे हुए तो गांधी पूर्वी बंगाल के दंगाग्रस्त जिलों में बिना किसी भय के पहुंच गए और उन्होंने हिंसा से सर्वाधिक प्रभावित पीड़ितों को सद्भाव और संबल प्रदान किया। जब भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ तो गांधी ने आजादी के जश्न में शामिल होने से मना कर दिया। जब पूरा देश ऐतिहासिक क्षण में खुशियां मना रहा था तो गांधी नोआखली में थे जहाँ सांप्रदायिक हिंसा फैल गई थी। जब हिंसा में कमी नहीं आई तो गांधी कलकत्ता में आमरण अनशन पर बैठ गए। उन्होंने अपना उपवास तब समाप्त किया जब दोनों पक्ष हत्याएं रोकने के लिए सहमत हो गए और वहां शांति बहाल हुई। इतिहासकार सुमित सरकार ने इसे गांधी के जीवन के सर्वोत्कृष्ट घंटे (1983 : 437) के रूप में व्याख्या की है। गांधी ने भारत विभाजन के बीच हिंसा की लपटों को शांत करने का प्रयास किया। भीखू पारेख का मानना है कि गांधी के लिए हिन्दू-मुस्लिम विभाजन अस्वीकार्य था क्योंकि भारत के सम्बन्ध में उनकी अवधारणा इस तथ्य पर आधारित थी कि विभिन्न समुदाय सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व और सहयोग के साथ मिलजुलकर साथ रहेंगे और साथ ही अपने विशिष्ट विचारों को बनाए रखेंगे तथा अपनी विशिष्ट भूमिकाएं निभाते रहेंगे। (1989 : 184)

अस्पृश्यता का उन्मूलन

यदि दलित मुक्ति का प्रयास पूरा नहीं हुआ तो गांधी के स्वराज प्राप्ति का लक्ष्य अधूरा ही रह जाएगा। हिन्दू-मुस्लिम सवाल के साथ गांधी ने अस्पृश्यता को स्वराज के लक्ष्य में एक बड़ा अवरोध माना। 1921 में गांधी ने लिखा, "स्वराज एक अर्थहीन शब्द है यदि हम भारत की आबादी के पांचवे भाग को निरंतर अधीन रखना चाहते है और जानबूझकर उन्हें राष्ट्रीय संस्कषति के लाभों से वंचित रखते हैं। शुद्धिकरण के इस आंदोलन में हम ईश्वर की मदद चाहते हैं।"

ईश्वर की सबसे योग्य प्राणियों को हम मानवता का अधिकार देने से इंकार करते हैं। दूसरों की अमानवीयता से मुक्ति के लिए हम स्वयं अमानवीय बने नहीं रह सकते। (यंग इंडिया, 25-9-1921 : 165)

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 के तहत 1950 में अस्पृश्यता की प्रथा की समाप्ति के बावजूद जाति आधारित राजनीति, हिंसा और विभेद अभी भी देश के कई हिस्सों में अपने क्रूरतम रूप में मौजूद है। गांधी अस्पृश्यता की प्रथा को खत्म करना चाहते थे क्योंकि वे इसे किसी दैवीय अधिकार के तहत नहीं बल्कि व्यक्ति द्वारा थोपी गई बुराई के रूप में देखते थे। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि अस्पृश्यता के लिए शास्त्रों में कोई जगह नहीं है। एक धार्मिक पुस्तक कभी भी अधार्मिक शिक्षा नहीं दे सकती। अद्वैत वेदों का मूलभूत सिद्धांत है जिसने व्यक्तियों के बीच के सभी विभेदों को नकार दिया। वे आशा करते थे कि लोग किसी को भी अस्पृश्य नहीं मानेंगे और हरिजनों को अपने खून के रिश्ते के भाई-बहन समझेंगे (सीडब्ल्यू एम जी 57 : 210)। उन्होंने लिखा, "अस्पृश्यता तर्क के विरुद्ध है तथा दया,

करुणा और प्रेम के खिलाफ है। (यंग इंडिया 6-10-1921) यह शैतान का धर्म है और इसे धर्म का अनुमोदन नहीं है। उनके कुछ विरोधियों ने अस्पृश्यता के समर्थन में धर्मग्रंथ उद्घृत किये।" गांधी ने कहा, "धर्मग्रंथ तर्क और सत्य से परे नहीं हो सकते। उनका आशय तर्क और सत्य को परिष्कृत करना है।" (यंग इंडिया : 19-01-1921)

हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए गांधी जाति व्यवस्था को समाप्त करना जरूरी मानते थे। उन्होंने प्रत्येक हिन्दू से आग्रह किया कि वे केवल अस्पृश्यता को ही अपने दिमाग और दिल से खत्म न करें बल्कि किसके साथ रहना है, किससे मित्रता करनी है और किसके साथ खाना-पीना है, किसके साथ विवाह करना है जैसे मामलों में भी जाति व्यवस्था को नजरअंदाज करें। अस्पृश्यों को एक सकारात्मक अर्थ प्रदान करने के लिए गांधी ने उन्हें एक नया नाम दिया – हरिजन। इसका अर्थ है ईश्वर की संतान। इसका उद्देश्य था कि हिन्दू यह समझें कि ईश्वर के समक्ष सभी बराबर हैं। गांधी ने 1932 में "हरिजन सेवक संघ" की स्थापना की। उन्होंने अपनी भावनाओं का प्रसार करने के लिए 'हरिजन' अखबार का प्रकाशन किया। हालाँकि गांधी उच्च जाति से आते थे लेकिन उन्होंने अपने को किसान, मजदूर, बुनकर और मेहतर कहने में गौरवान्वित महसूस किया। (हरिजन, 24-09-1927) अस्पृश्यता समाप्त करने के लिए उन्होंने स्पष्टतः कई भूमिकाएं निभाईं।

गांधी ने जाति व्यवस्था के प्रति कठोर दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने अस्पृश्यता के सवाल को सामाजिक सवाल माना। भारत में अपने कार्य करने के तीन दशकों के दौरान उन्होंने अस्पृश्यता पर कठोर आघात किया। यहां यह याद करना उचित है कि 1901 की गंभीर महामारी के दौरान वे अस्पृश्य लोगों के घर गए और उनकी सेवा-सुश्रुषा की। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद जब भी वे दिल्ली आते थे वे अछूतों और गरीबों की बस्ती बाल्मीकि कॉलोनी में निवास करते थे।

अल्प आयु से ही गांधी ने अस्पृश्यता पर सवाल उठाना शुरू कर दिया था। उका नाम का एक अछूत गांधी के घर के शौचालय साफ करता था। गांधी की मां ने उन्हें उका को छूने से मना कर रखा था। गांधी याद करते हुए कहते हैं, "यदि मैं भूलवश भी उका को छू लेता था तो मुझे परिमार्जन करना पड़ता था। मैं स्वभाविक रूप से आज्ञा का पालन करता था। मुस्कुराते हुए मैं विरोध करता था कि अस्पृश्यता धर्म द्वारा अनुमोदित नहीं है। .... मैंने अपनी मां से कहा कि वे पूर्णतया गलत है कि उका को छूना पाप है। (सीडब्ल्यूएम जी, खंड 19 : 570) धीरे-धीरे उन्होंने अपने दृष्टिकोण को विकसित किया और अस्पृश्यता उनके लिए गैर-समझौता योग्य मुद्दा बन गया।"

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका और भारत में जो आश्रम बनाए, उनमें अस्पृश्यता के लिए कोई जगह नहीं थी। आश्रम के सभी सदस्य एक साथ खाते और मिलते-जुलते थे। अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं, "दक्षिण अफ्रीका में अछूत दोस्त मेरे घर पर आते थे, मेरे साथ रहते थे और मेरे साथ खाना खाते थे।" (गांधी 2001 : 360) । एक बार उनकी पत्नी कस्तूरबा ने एक दलित-अतिथि के चौंबर-पॉट को साफ करने से मना कर दिया तो गांधी ने कहा कि वे अपने घर में इस तरह के बकवास को बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने कस्तूरबा का हाथ पकड़ा और उन्हें धक्का देकर बाहर निकालने के लिए खींचकर दरवाजे तक ले गए। (गांधी 2001 : 225) आश्रमवासियों, कस्तूरबा और उनके परम शिष्य मगनलाल के विरोध के बावजूद गांधी ने 1915 में दूधाभाई के अछूत परिवार को अहमदाबाद के नये आश्रम कोचरब में रहने की अनुमति दे दी। उन्हें इसका जरा भी पश्चात्ताप नहीं हुआ जब आश्रम की वित्तीय सहायता बंद हो गई। बाद में उन्होंने एक अछूत लक्ष्मी को अपनी बेटी माना। लक्ष्मी जब बड़ी हो गई तो उन्होंने उसका विवाह एक ब्राह्मण लड़के से किया और इस प्रकार स्वजाति विवाह की प्रथा का विरोध किया।

पर्यावरण

गांधी ने केवल भौतिक समृद्धि ही नहीं बल्कि पूर्ण मानसिक व नैतिक विकास को मानवीय सुख से जोड़ा। गांधी के लेख मनुष्य द्वारा प्रकृति का दोहन, अति भौतिकतावाद और औद्योगिक सभ्यता जैसे विषयों से भरे पड़े हैं। गांधी को आधुनिक अर्थों में पर्यावरणविद् नहीं कहा जा सकता है। गांधी के समय में पर्यावरण संबंधी चिताएं नगण्य थी। परन्तु विकास, तकनीक, आत्मनिर्भरता, ग्राम स्वराज, स्वदेशी जैसे विषयों पर उनके विचार निश्चित रूप से पर्यावरण संबंधी चिंताओं को व्यक्त करते हैं। भारत में पर्यावरणविद् और पर्यावरण आधारित आंदोलन उनके विचारों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

गांधी कहते थे, "सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति के पास पर्याप्त है लेकिन प्रकृति किसी व्यक्ति के लालच को पूरा नहीं कर सकती।" आधुनिक पर्यावरणविदों के लिए यह पंक्ति आधार वाक्य बन गई है। 1909 के हिन्द स्वराज में उन्होंने अबाधित औद्योगिकतावाद और भौतिकतावाद के प्रति मानवता को आगाह किया। हिन्द स्वराज में उन्होंने आधुनिक सभ्यता की कटु आलोचना करते हुए मानव जीवन के विकास के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण को सामने रखा था। गांधी के अनुसार आधुनिक सभ्यता की समस्या यह है कि इसने शारीरिक और भौतिक कल्याण को ही जीवन का लक्ष्य बना रखा है। आधुनिक सभ्यता की सबसे महान "उपलब्धि" है – बड़े पैमाने पर विनाश के लिए हथियारों का निर्माणय अराजकतावाद में आश्चर्यजनक वृद्धि, पूँजी और श्रम के बीच संघर्ष और निर्दोष, गूंगे और जिंदा जानवरों पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नाम पर क्रूरता। उनका मानना था कि विज्ञान तभी विज्ञान है जब यह शरीर, मन और आत्मा की भूख से संतुष्ट करने की पूरी गुंजाइश रखता है।

गांधी रस्किन और थोरो के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। वे आधुनिक औद्योगिक विकास के आलोचक थे। हिन्द स्वराज में वे सिफारिश करते हुए कहते हैं कि गांव, आर्थिक और सामाजिक संगठन का आदर्श उदाहरण है। उनका लेखन औद्योगिक समाज की ज्यादतियों पर टिप्पणियों से भरा पड़ा है। 1928 में ही उन्होंने उत्पादन और उपभोग के पश्चिमी तरीके की आलोचना करते हुए कहा था कि वैश्विक स्तर पर यह दीर्घकालिक उपाय नहीं हो सकता। उन्होंने कहा, "ईश्वर भारत को पश्चिमी औद्योगिकीकरण के तरीके को अपनाने से बचाए। ब्रिटेन जैसे छोटे द्वीप देश के आर्थिक पूँजीवाद ने आज विश्व को हथकड़ियों में बांध रखा है। यदि 30 करोड़ का देश उसी प्रकार का आर्थिक शोषण अपना लेता है तो यह पूरी दुनिया को टिड्डियों की तरह नग्न कर देगा।"

गांधी का सबसे बुरा डर वास्तविकता का रुप ले चुका है। पिछली दो शताब्दियों के दौरान विकास परियोजनाओं के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हुआ हैय सामाजिक-आर्थिक अभाव में वृद्धि हुई है, केन्द्रीयकरण बढ़ा है और बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन हुआ है। पर्यावरण और पारितंत्र के संकट के संदर्भ में गांधी का समावेशी विश्व के सम्बन्ध में दृष्टिकोण आज भी महत्वपूर्ण है। स्वदेशी, स्वदेशी तकनीक, ग्राम अर्थव्यवस्था और सादा जीवन पर उनका जोर आज और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

आज गांधी और पर्यावरणविदों के विचार एक जैसे लगते हैं। पर्यावरणविद गरीबों और वंचितों के हितों की रक्षा करने तथा पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए अहिंसात्मक कार्य पद्धति की वकालत करते हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ पर्यावरण आंदोलनों ने मानवीय गरिमा और न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक नये राजनीतिक संघर्ष की शुरुआत की। विकास के लिए आवश्यक संसाधन-परिपूर्ण मांग ने पारितंत्र विनाश और आर्थिक अभाव को जन्म दिया है। इससे विकास नये अर्थ में पारिभाषित हुआ है। 1971 के चिपको

आंदोलन से इसकी शुरुआत हुई और तब से लेकर आज तक यह पर्यावरणविदों को झकझोरता रहा है। चिपको आंदोलन अहिंसक प्रतिरोध का एक उत्कृष्ट आंदोलन बन गया। केन्द्रीय तंत्र, मान्यता प्राप्त नेतृत्व और पूर्णकालिक कार्यकर्त्ताओं के अभाव के बावजूद पहाड़ के साधारण निवासियों ने प्रतिरोध और संघर्ष की मिसाल पेश की। चिपको आंदोलन की उत्पत्ति का गांधीवादी परंपरा से मजबूत संबंध था। गांधीवादी सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं ने आंदोलन का नेतृत्व किया था। गांधीवादी सत्याग्रह के तरीकों को अपनाया गया। सुंदरलाल बहुगुणा, चंडी प्रसाद भट्ट, धूमसिंह नेगी, घनश्याम रातूरी, इंदू तिकेकर जैसे लोगों ने इस आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। हाल के वर्षों में मेधा पाटकर, वंदना शिवा, सुनीता नारायण, राधा भट्ट जैसे पर्यावरणविदों ने गांधीवादी नैतिकता का पालन करते हुए सफलता के साथ इस आंदोलन का आगे बढ़ाया है।

निष्कर्ष

अपनी मृत्यु के 70 सालों के बाद गांधी आज भी मायने रखते हैं। अहिंसक समाज, स्थायी विश्व, धार्मिक बहुलवाद, मानव जाति की एकता आदि के बारे में उनके समग्र दृष्टिकोण की आज पहले से ज्यादा जरूरत है। गांधी ने मानव जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाया। वे चाहते थे कि जीवन के विभिन्न आयामों दृ सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक के बीच सामंजस्यता से एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण हो। स्वराज की प्राप्ति उनके जीवन का उद्देश्य था। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि गांधी के संदेश और उदाहरण अपनी जड़ें गहरी नहीं जमा पाए और उनका स्वराज का लक्ष्य अधूरा ही रह गया। आज की चुनौतियां अधिक गंभीर हैं। गंभीर संकट के वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गांधी पहले से अधिक प्रासंगिक हैं। इस निर्णायक मोड़ पर, महात्मा गांधी के विचारों और कार्यों पर नये सिरे से विचार करना आवश्यक हो गया है।

इस संपादित खंड को 12 इकाइयों में बांटा गया है। मूल प्रति में गांधी के विचारों का सत्यापन शामिल है। यह समकालीन भारत में गांधी के प्रभाव से छात्रों को अवगत कराएगा। इससे छात्र उनकी विरासत का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे। इन निबंधों का व्यापक उद्देश्य है - समकालीन भारत और विश्व के संदर्भ में गांधीवादी समाधानों की प्रासंगिकता और प्रभाव को रेखांकित करना। गांधी की अधिकांश चिंताओं को परिचय में ही शामिल किया गया है। गांधी की कार्ययोजना के महत्व की पहले पाठ में ही चर्चा की गई है। अगली इकाईयों में गांधी के दार्शनिक और ज्ञानमीमांसायुक्त अवधारणाओं पर विचार-विमर्श किया गया है। सत्य, अहिंसा, स्वराज, सत्याग्रह और न्यास से संबंधित गांधी के सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की गई है ताकि गांधी के नैतिक दर्शन को समझने में आसानी हो। गांधी द्वारा विकसित ये नैतिक उपदेश भारत और विश्व राजनीति के अभिन्न अंग बन गए हैं। पांडुलिपि इकाई बताती है कि वर्तमान विश्व व्यवस्था को समझने में यह मानक फ्रेमवर्क बहुत उपयोगी है। हिंसा, असहिष्णुता और घृणा से भरे आजे के वैश्विक वातावरण में गांधी का मानवतावाद और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप में हमारे सामने आते हैं। सांप्रदायिक सौहार्द, नैतिकता और शिक्षा पर आधारित इकाई में गांधीवादी नैतिकता के महत्व पर विचार-विमर्श किया गया है। वैश्विक शांति तथा सतत पर्यावरण के संदर्भ में गांधी के हस्तक्षेपों की व्याख्या की गई है। विकास के नये प्रतिमानों की कमियों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह भौतिक और प्राकृतिक दुनिया के शोषण के खिलाफ जनांदोलनों और सिविल सोसाइटी के संघर्षों को भी रेखांकित करता है। ये आंदोलन गांधी के वैश्विक महत्व के प्रति गांधीवादी कटिबद्धता की पुष्टि करते हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 1
गाँधी : एक परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 गाँधी : जीवन और काल

संरचना

1.1 प्रस्तावना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

1.2 बचपन

1.3 इंग्लैंड में बिताए वर्ष

1.4 दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष

1.5 भारत में संघर्ष

1.5.1 प्रथम विश्व युद्ध के बाद खिलाफत आंदोलन

1.5.2 असहयोग आंदोलन

1.5.3 साइमन कमीशन और नमक सत्याग्रह

1.5.4 गोल मेज सम्मेलन

1.5.5 भारत छोड़ो आंदोलन

1.5.6 स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

1.5.7 महात्मा गाँधी की हत्या

1.6 सारांश

1.7 संदर्भ ग्रंथ

1.8 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

1.1 प्रस्तावना

महात्मा गाँधी (1869-1948) जिन्हें भारतीय प्यार से बापू बुलाते थे, भारत की आजादी के लिए संघर्ष की कहानी में हमेशा उनकी बहुत चर्चा की गई है। उनके द्वारा प्रचारित मूल्य अभी भी भारतीय शासन के मूल में हैं और सही और गलत की कसौटी माने जाते हैं। वर्षों से महात्मा गाँधी के बहुमुखी व्यक्तित्व ने कई विद्वानों को आकर्षित किया है और इस प्रकार हमारे पास गाँधी पर एक विशाल साहित्य है। गाँधी को व्यापक रूप से संलग्न करने के प्रयास उनके जीवन के ऐतिहासिक आख्यानों या नेतृत्व या उनके विचार के सैद्धांतिक मूल्यांकन के अध्ययन में आते हैं। निम्नलिखित इकाई उनके जीवन और समय का एक संक्षिप्त परिचय है। यह इकाई उनके जीवन के चार महत्वपूर्ण काल (अ) बचपन, (ब) युवाकाल में गाँधी की इंग्लैंड में शिक्षा, (स) दक्षिण अफ्रीका में गाँधी का समय और (द) गाँधी के भारत में एक राजनीतिक नेता के रूप में उभरने पर चर्चा करके गाँधी के विकास को रेखांकित करती है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

यह इकाई आपको समझने में सक्षम करेगा :

- महात्मा गाँधी का जीवन और काल।
- मोहनदास करमचंद गाँधी के बचपन के दिन।
- इंग्लैंड में गाँधी की शिक्षा।

सुरुचि अग्रवाल, शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

- दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों के अधिकारों के लिए संघर्ष।
- ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गाँधी का भारत में संघर्ष।

1.2 बचपन

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर, गुजरात के काठियावाड़ के तट पर हुआ था। उनके माता-पिता करमचंद गाँधी और पुतलीबाई थे। हालाँकि गाँधी जाति के व्यापारी (बनिया) थे, पर वे महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर पहुंच गए थे। मोहनदास के पिता पोरबंदर के मुख्य प्रशासक और पोरबंदर के न्यायालय के सदस्य थे, और उनके दादा समीपवर्ती छोटे राज्य जूनागढ़ के थे। गाँधी विभिन्न धार्मिक वातावरण में पले-बढ़े। उनके माता-पिता मुख्य रूप से वैष्णव हिंदू थे। उनकी माँ प्रणामी संप्रदाय की थीं, जो हिंदू और मुस्लिम धार्मिक मान्यताओं का मेल थीं, उन्होंने वैष्णवों की पवित्र पुस्तकों और कुरान को समान सम्मान दिया और धार्मिक सद्भाव का प्रचार किया। उनके जीवन भर किए गए धार्मिक व्रत ने उनके बेटे पर एक अमिट छाप छोड़ दी।

उनके पिता के दोस्तों में कई जैन शामिल थे, जिन्होंने अहिंसा और आत्म-अनुशासन के सख्त सिद्धांत की शिक्षा दी। गाँधी को ईसाई मिशनरियों से भी अवगत कराया गया था, लेकिन उनके बचपन में ईसाई धर्म की महत्वपूर्ण उपस्थिति नहीं थी। बहुत से हिंदुओं की तरह उन्होंने भी कई तरह की धार्मिक मान्यताओं को स्वीकार किया, लेकिन न तो उन्हें अपने या किसी दूसरे धार्मिक परंपरा का कोई गहरा ज्ञान नहीं था। गाँधी एक शर्मीले और औसत दर्जे के छात्र थे, और अपनी स्कूली शिक्षा के दौरान उनका प्रदर्शन औसत ही रहा। उनकी शादी कस्तूरबाई से हुई थी जब वे दोनों 13 साल के थे। गाँधीजी के जीवन की घटनाएँ जिनके परिणामस्वरूप दो अपरिपक्व मन पति और पत्नी की वयस्क भूमिकाओं में बसने की कोशिश कर रहे थे, उन्हें बाल विवाह का विरोधी बना दिया।

मोहनदास के बचपन के शुरुआती साल पोरबंदर में बीते। वह अपनी उम्र के अन्य शरारती बच्चों जैसे ही थे जो शिक्षकों के पीठ पीछे उनका नाम रखा करते थे। उन्होंने स्कूल का आनंद लिया लेकिन उनके लिए पहाड़ा याद करना आसान नहीं था। मोहनदास या मोनिया, जैसा उनकी माँ बुलाया करती थी, जब उनकी उम्र सात साल थी, उनके पिता राजकोट कोर्ट के सदस्य बन गए। इसलिए उनके माता-पिता पोरबंदर से राजकोट चले गए। इधर, मोहनदास को प्राथमिक विद्यालय में भर्ती कराया गया।

युवा गाँधी बहुत शर्मीले थे। वह समय के बहुत पाबंद थे। उन्हें देर से स्कूल पहुंचना पसंद नहीं था और स्कूल बंद होने के तुरंत बाद घर वापस जाना पसंद करते थे। बाद में थोड़ा बड़ा होने के बाद उन्होंने सड़कों पर और समुद्र के किनारे खेलना शुरू कर दिया। मोहनदास एक सामान्य छात्र थे और इतने डरपोक कि किशोरावस्था में भी अंधेरे में नहीं सोते थे। आगामी वर्षों में, इस किशोर ने विद्रोह में धूम्रपान, मांसाहार और घरेलू नौकरों के पैसे भी चोरी किए। एक बार उन्होंने अपने भाई के सोने का बाजूबंद चुरा लिया। वह अपने पिता से डरते थे। उनसे मिलने वाले किसी सजा के कारण नहीं, बल्कि अपने पिता को बहुत पीड़ा देने के कारण। उन्होंने अपने पिता को लिखित रूप से कबूल किया और इन सबसे बाहर निकलने की कोशिश की।

वह खुद पर शर्मिंदा थे और कांपते हाथों से उन्होंने वह पत्र अपने पिता को दे दिया। गाँधीजी को हिंसक प्रतिक्रिया की उम्मीद थी। उनके पिता उस समय बीमार थे। वह बैठ गए और पढ़ा कि उनके बेटे ने क्या लिखा है। उसकी आँखों में आँसू भर आए और उन्होंने बस उस पत्र को फाड़ दिया। यह उनके पिता से अपेक्षित नहीं था। लेकिन स्पष्ट

स्वीकारोक्ति और इस तरह के पाप को फिर कभी नहीं करने के वादे के कारण पिता ने अपने बेटे को माफ कर दिया। मोहनदास भी रो पड़े। उसी समय उन्हें लगा कि उनके पाप उनके पिता के आँसुओं में बह गए हैं। अहिंसा का उनका पहला पाठ यहीं से शुरू हुआ। उन्होंने हर चीज को बदलने की इसकी असीमित शक्ति का एहसास किया।

बचपन के अनुभवों और प्रभावों ने गाँधी के वयस्क जीवन को भी प्रभावित किया जैसा कि हर कोई करता है। वह एक धार्मिक हिंदू थे और अन्य सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने महसूस किया कि वह झूठ नहीं बोल सकते क्योंकि वह उस भारी अपराधबोध को बर्दाश्त नहीं कर सकते जो बाद में महसूस होता था।

मोहन ने 1887 में बॉम्बे विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास की। एक साल पहले उनके पिता की मृत्यु ने परिवार के साधनों को तहस नहस कर दिया था। परिवार का एकमात्र लड़का होने के नाते, जो अपनी पढ़ाई में लगा था, परिवार की उम्मीदें इन पर ही टिकी हुई थीं और उन्हें निकट के शहर भावनगर भेज दिया गया, जहां कॉलेज था। दुर्भाग्य से वहां का शिक्षण अंग्रेजी माध्यम में था। वह व्याख्यान समझ नहीं पाते थे और कोई प्रगति नहीं कर पाने से निराश थे। इस बीच, परिवार के एक दोस्त मावजी दवे ने सुझाव दिया कि मोहन को बार में अर्हता प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड जाना चाहिए। विदेश जाने के विचार से मोहन काफी खुश हुए। उनके बड़े भाई को इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह प्रस्ताव आकर्षक था, लेकिन इसमें खर्च बहुत था। उनकी मां अपने सबसे छोटे लड़के को अज्ञात प्रलोभनों और खतरों का सामना करने के लिए विदेश जाने देना नहीं चाहती थी। मोध बनिया जाति, जिस जाति के गाँधी थे, ने गाँधी के इंग्लैंड चले जाने पर पूरे परिवार को बहिष्कृत करने की धमकी दी। हालाँकि, इन सभी बाधाओं को मोहन ने अपने संकल्प से सफलतापूर्वक पार कर लिया, और 18 वर्ष की उम्र में, सितंबर 1888 में, वह इंग्लैंड के लिए रवाना हुए।

1.2 इंग्लैंड में बिताए वर्ष

4 सितंबर, 1888 को, मोहनदास बॉम्बे से इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। मोहनदास बोर्ड पर अपनी पहली सुबह कभी नहीं भूले। अपने काले सूट, शर्ट और टाई में वे काफी असहज महसूस कर रहे थे। उन्हें पूरा यकीन था कि भारतीय पोशाक अधिक उपयुक्त थी, लेकिन उन्हें लगा कि वह इसमें बहुत प्रभावशाली दिखते हैं। साउथेम्प्टन में उतरने पर उन्होंने देखा कि सभी लोग गहरे रंग के कपड़े, गोल टोपी और ओवरकोट पहने हुए थे। मोहनदास यह देखकर काफी शर्मिंदा थे कि केवल वही सफेद फलालैन पहने थे। लंदन में, सबसे पहले वह विक्टोरिया होटल में रुके। गाँधी परिवार के मित्र डॉक्टर पी जे मेहता वहां उनसे मिलने वाले पहले व्यक्ति थे।

गाँधी को अपने आसपास सब कुछ अजीब लग रहा था। जब तक उन्होंने एक शाकाहारी रेस्तरां की खोज नहीं की तब तक वह लगभग भूखे ही रहे और उन्हें घर की याद आती रही। उन्हें पश्चिमी शिष्टाचार और रीति-रिवाजों को सीखने में बहुत दिक्कत हुई। उन्होंने अच्छी तरह से सिलवाया कपड़ा और एक टोपी खरीदी। उन्होंने दर्पण के सामने बहुत समय बिताया, अपने बाल सीधे किए और अपनी टाई को ठीक किया। उन्होंने नृत्य सीखना शुरु किया, लेकिन जल्द ही इसे छोड़ दिया क्योंकि उन्हें लय की कोई समझ नहीं थी। उन्होंने वायलिन बजाने में अपना हाथ आजमाया, लेकिन असफल रहे। उन्होंने फ्रेंच और अभिजात्य वर्ग में सबक लिया, लेकिन वहां भी वह सोते रहते। अंग्रेज बनने का उनका प्रयास लगभग तीन महीने तक चला। फिर उन्होंने यह विचार छोड़ दिया। उन्होंने पढ़ाई पर ध्यान देना शुरु किया। उनका भोजन सामान्य था। उन्होंने परिवहन पर खर्च से परहेज किया और

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

लंदन में हर जगह पैदल चलते। उन्होंने अपने द्वारा खर्च किए गए पैसे का हिसाब रखना शुरू कर दिया। मोहनदास लंदन वेजीटेरियन सोसाइटी में शामिल हो गए और जल्द ही उसकी कार्यकारी परिषद में शामिल हो गए। उन्होंने वेजिटेरियन पत्रिका के लिए लेख भी लिखे।

इंग्लैंड के बोर्डिंग हाउस और शाकाहारी रेस्तरां में, गाँधी न केवल भोजन के शौकीनों से मिले, बल्कि कुछ धनवान पुरुषों और महिलाओं से भी, जिनके द्वारा उनका बाइबिल से परिचय हुआ और इससे भी महत्वपूर्ण, भगवद्गीता, जिसे उन्होंने पहली बार सर एडविन अर्नोल्ड के अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ा था, और बुद्ध के जीवन पर उन्होंने लाइट ऑफ एशिया में पढ़ा और कार्लाइल के हीरोज ऐंड हीरो वर्शिप में इस्लाम के पैगंबर पर एक अध्याय भी पढ़ा। सभी धर्मों के लिए सम्मान का दृष्टिकोण और उनमें से प्रत्येक में सर्वश्रेष्ठ को समझने की इच्छा इस प्रकार उनके जीवन के शुरुआती समय में ही रच बस गई थी।

भगवद्गीता (जिसे आमतौर पर गीता के रूप में जाना जाता है) महाभारत के महान महाकाव्य का हिस्सा है और दार्शनिक कविता के रूप में, हिंदू धर्म की सबसे लोकप्रिय अभिव्यक्ति है। अंग्रेजी शाकाहारियों की एक प्रेरक भीड़ थी। उनमें एडवर्ड कारपेंटर, ''द ब्रिटिश थोरो'' जैसे समाजवादी और मानवतावादी शामिल थे, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ जैसे फेबियनय और एनी बेसेंट जैसे थियोसोफिस्ट शामिल थे। उनमें से अधिकांश आदर्शवादी थे; कुछ विद्रोही थे जिन्होंने विक्टोरियन स्थापना के प्रचलित मूल्यों को खारिज कर दिया, पूंजीवादी और औद्योगिक समाज की बुराइयों की आलोचना की, सरल जीवन के पंथ का प्रचार किया, और भौतिक मूल्यों और सहयोग पर नैतिकता की श्रेष्ठता पर जोर दिया। इन विचारों ने गाँधी के व्यक्तित्व को आकार देने में और अंत में, उनकी राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान देने में बहुत अहम भूमिका निभाई। बाइबिल, बुद्ध और गुजराती कवि शामल भट्ट की शिक्षाएँ उनके दिमाग में घर कर गई थीं। घृणा के बदले प्यार का विचार, और बुराई के बदले अच्छाई ने उन्हें पूरी तरह से वश में नहीं किया, लेकिन उनके प्रभावशाली दिमाग में इसकी छाप पड़ चुकी थी।

बार परीक्षा में अधिक अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती थी इसलिए गाँधी के पास पर्याप्त खाली समय था। ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में प्रवेश प्राप्त करना संभव नहीं था क्योंकि उन संस्थानों में अध्ययन के लिए लंबे समय तक काम और बहुत वित्तीय संसाधन की आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने लंदन मैट्रिक परीक्षा में शामिल होने का फैसला किया। इसका मतलब कड़ी मेहनत और त्याग था, लेकिन उन्होंने कड़ी मेहनत की। वह फ्रेंच, अंग्रेजी और रसायन विज्ञान में उत्तीर्ण हुए लेकिन लैटिन में असफल रहे। उन्होंने फिर से कोशिश की, और इस बार वे लैटिन में भी उत्तीर्ण हो गए।

इस बीच, उन्होंने अपने कानून के अध्ययन में प्रगति की और नवंबर 1888 में इनर टेम्पल में भर्ती हुए। छात्रों को प्रत्येक वर्ष कम से कम छह बार एक साथ भोजन करने के लिए कोर्ट ऑफ इन्स की परंपरा निभानी होती थी। पहली बार जब गाँधी ने अपने साथी छात्रों के साथ भोजन किया, तो वह काफी घबराहट में थे। उन्हें यकीन था कि लड़के उन्हें मांस और शराब से मना करने पर चिढ़ाते। जब शराब की पेशकश की गई, तो उन्होंने इसे लेने से मना कर दिया। उन्होंने मांस को भी नहीं छुआ, और वहां बैठकर रोटी, उबले हुए आलू और गोभी खाकर काफी संतुष्ट थे। उन्हें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि उनकी अजीब आदतों के कारण किसी ने भी उनका मजाक नहीं उड़ाया। अगली बार जब वह रात के खाने के लिए गए, तो उनके पास कानून की किताबों का ढेर था। वह किताबों को पढ़ने के लिए अपने कमरे में ले जा रहे थे। अन्य छात्र सीखने के प्रति उनके समर्पण से चकित थे और उन्हें लैटिन में रोमन कानून पढ़ता देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। कुछ दोस्तों ने

सुझाव दिया कि वह इस तरह से बेकार परेशान होने के बजाय कानून के संक्षिप्त संस्करणों को पढ़ें। गाँधी ने अपने दोस्तों को समझाया कि वह इस विषय में अपनी रुचि के कारण इतनी मेहनत करते हैं, और वह ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।

फ्रांस की एक छोटी यात्रा के बाद, उन्होंने कानून के फाइनल परीक्षा की तैयारी की। परिणाम जल्द ही घोषित किए गए। वह उच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण हुए। 10 जून, 1891 को गाँधी को बार में बुलाया गया। उन्हें बैरिस्टर के रूप में भर्ती किया गया था और अगले दिन औपचारिक रूप से उच्च न्यायालय में नामांकित किया गया। अगले दिन, 12 जून को वह भारत के लिए रवाना हुए। गाँधी का इंग्लैंड में तीन साल का प्रवास काफी सुखद रहा। वे महान बौद्धिक गतिविधि के दिन थे, और विचार के हर स्कूल के प्रति सहिष्णु रहे। पूरा देश ही मानो एक जीवित विश्वविद्यालय था। जब गाँधी एस.एस. असम में घर के लिए रवाना हुए, उन्होंने महसूस किया कि, भारत के बाद, वह दुनिया के किसी अन्य स्थान की बजाय इंग्लैंड में रहेंगे।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) गाँधी के बचपन और इंग्लैंड में उनके द्वारा बिताए वर्षों का संक्षेप में उल्लेख करें।

....

....

....

....

....

1.4 दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष

जब गाँधी बंबई पहुँचे तो उन्हें पता चला कि उनकी माँ की मृत्यु हो चुकी है। विदेशी भूमि में उन्हें इस सदमे से दूर रखने के लिए यह खबर जानबूझ कर उन्हें नहीं दी गई थी। राजकोट में कुछ समय बिताने के बाद उन्होंने अपने छोटे बेटे और अपने भाई के बच्चों की शिक्षा का भार संभाला। उन्होंने बॉम्बे में वकालत करने का फैसला किया। वह कुछ महीनों के लिए बॉम्बे में रहे, जहां उन्हें एक छोटा केस मिला था, लेकिन जब वह अदालत में बहस करने के लिए उठे, तो वह घबराहट में एक शब्द भी नहीं बोल पाए।

बंबई में खुद को स्थापित करने में विफल रहने के बाद, गाँधी राजकोट लौट आए और उन्होंने फिर से वहां वकालत शुरू की। वह अभी भी बहुत प्रगति नहीं कर पाए और दुखी थे, साथ ही काठियावाड़ के छोटे राज्यों में व्याप्त क्षुद्र साजिश के माहौल के साथ तालमेल नहीं बैठा सके। इस दौरान एक मुकदमे में उनके वकील को निर्देश देने के लिए उनके पास दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी की ओर से दक्षिण अफ्रीका जाने का एक प्रस्ताव आया। गाँधी के अनुसार यह एक ईश्वर प्रदत्त अवसर था। गाँधी ने इस अवसर का फायदा उठाया और अप्रैल 1893 में दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हुए और वहां एक साल तक रुकने का इरादा किया, लेकिन इक्कीस साल तक रहे। यह दक्षिण अफ्रीका था जहां एक शर्मीला, डरपोक, अनुभवहीन, वकील उन ताकतों से भिड़ गया था, जिसने उसे अपने छिपे हुए नैतिक संसाधनों में बदल दिया और दुर्भाग्य को रचनात्मक आध्यात्मिक अनुभवों में बदल दिया।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

फ्रॉक-कोट पहने और पगड़ी बांधे जब गाँधी डरबन में उतरे तो वहां उनके मुवक्किल अब्दुल्ला सेठ ने उनकी अगवानी की। अपने वहां आगमन पर उन्हें नस्लीय भेदभाव और दमनकारी माहौल का अहसास हुआ। बड़ी संख्या में भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में बसाया गया था, कुछ व्यापारियों के रूप में, कुछ अन्य व्यवसायों में, उनमें से अधिकांश बहुसंख्यक गिरमिटिया मजदूर या उनके वंशज थे। वे सभी श्वेत वासियों द्वारा पराये के रूप में देखे जाते थे और कुली या समिस कहलाते थे। इस प्रकार एक हिंदू डॉक्टर एक कुली डॉक्टर था और गाँधी खुद एक कुली बैरिस्टर थे। डरबन में लगभग एक सप्ताह रुकने के बाद वे ट्रांसवाल की राजधानी प्रिटोरिया के लिए रवाना हुए। वहां एक मुकदमे के सिलसिले में उनकी मौजूदगी जरूरी थी। उनके ग्राहक द्वारा उनके लिए प्रथम श्रेणी का टिकट खरीदा गया था। जब ट्रेन लगभग रात के 9 बजे नेटाल की राजधानी मैरिटबर्ग पहुंची, एक श्वेत यात्री जो ट्रेन में चढ़ा, उसने डिब्बे में एक काले व्यक्ति की उपस्थिति पर आपत्ति जताई तो एक रेलवे अधिकारी ने गाँधी को तीसरे कक्षा में चले जाने का आदेश दिया। जब उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया, तो एक कांस्टेबल ने उन्हें बाहर धकेल दिया और उनका सामान रेलवे अधिकारियों ने छीन लिया। कड़ाके की सर्दी और कड़कड़ाती ठंड थी। गाँधी पूरी रात इंतजार कक्ष में बैठे कांपते रहे और यह सोचते रहे कि क्या उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए या भारत वापस चले जाना चाहिए। उन्होंने निर्णय लिया कि अपने दायित्वों को पूरा किए बिना भाग जाना कायरता थी।

अगली शाम उन्होंने ट्रेन की यात्रा जारी रखी, इस बार बिना किसी घटना के, लेकिन चार्ल्सटाउन से जोहान्सबर्ग तक की यात्रा पर एक बड़ी दुर्घटना उनका इंतजार कर रही थी, जिसे स्टेजकोच द्वारा पूरा किया जाना था। उन्हें बाहर बक्से पर कोचमैन के साथ बैठने को कहा गया जबकि श्वेत कंडक्टर श्वेत यात्रियों के साथ अंदर बैठा था। गाँधी ने इस अपमान को बर्दाश्त किया। रास्ते में जब कंडक्टर को सिगरेट पीना था तो उसने एक गंदी बोरी नीचे बिछा दी और गाँधी को वहां बैठने को कहा ताकि कंडक्टर बक्से पर बैठ कर सिगरेट पी सके। गाँधी ने मना कर दिया। कंडक्टर गाँधी पर झपट पड़ा और उन्हें नीचे गिराने की कोशिश की। गाँधी कोच बॉक्स की पीतल की रेल से चिपके रहे और कोई प्रतिकार नहीं किया। कुछ गोरे यात्रियों ने इस कायरतापूर्ण हमले का विरोध किया और कंडक्टर ने गाँधी को मारना बंद कर दिया।

हालांकि प्रिटोरिया में उनकी मुख्य चिंता मुकदमे के कारण थी, लेकिन गाँधी के सामाजिक न्याय की भावना उनके देशवासियों के प्रति क्रूरता के व्यक्तिगत अनुभव से जगी थी। इसलिए उन्होंने प्रिटोरिया में भारतीय समुदाय की बैठक बुलाने में कोई समय नहीं गँवाया, जिसमें बड़े पैमाने पर मुस्लिम व्यापारी शामिल थे। यह उनका पहला सार्वजनिक भाषण था जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक दिया। उन्होंने अपने देशवासियों को व्यापार में भी सत्यता का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें याद दिलाया कि उनकी जिम्मेदारी बहुत अधिक है क्योंकि उनके देश को एक विदेशी भूमि में उनके आचरण से आंका जाएगा। उन्होंने उन्हें धर्म और जाति के आपसी मतभेदों को भूल जाने और अपनी कुछ अस्वाभाविक आदतों को छोड़ने के लिए कहा। उन्होंने भारतीय प्रवासियों की देखभाल के लिए एक संघ के गठन का सुझाव दिया और अपने खाली समय और सेवाओं की पेशकश की।

ट्रांसवाल में भारतीयों की स्थिति नेटाल से भी बदतर थी। वे 3 पाउंड के कर का भुगतान करने के लिए मजबूर थे; उन्हें विशेष रूप से आवंटित स्थान, एक प्रकार की बस्ती को छोड़कर कहीं और जमीन खरीदने की अनुमति नहीं थी; उनके पास मताधिकार नहीं था, और उन्हें बिना विशेष अनुमति के रात के 9 बजे के बाद फुटपाथ पर चलने या घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी।

गाँधी उस मुकदमे में कड़ी मेहनत कर रहे थे जिसके लिए वह दक्षिण अफ्रीका आए थे और कानूनी प्रैक्टिस की अच्छी जानकारी हासिल कर ली। उन्होंने दो खोज की : एक यह था कि तथ्य कानून का तीन चौथाई होता है; दूसरा, जब मुकद्मेबाजी दोनों पक्षों को नुकसान पहुंचाए तो एक वकील का कर्तव्य बनता था कि उनसे अदालत के बाहर समझौता करा दे। इस विशेष मामले में वह अब्दुल्ला सेठ और विरोधी पक्ष, तैयब सेठ दोनों को मध्यस्थता स्वीकार करने के लिए मनाने में सफल रहे। प्रिटोरिया में अपना काम पूरा करने के बाद, गाँधी डरबन लौट आए और स्वदेश रवाना होने के लिए तैयार हो गए, लेकिन उनके सम्मान में दिए गए एक विदाई रात्रिभोज में किसी ने उन्हें नटाल मर्करी का एक समाचार दिखाया जिसमें नटाल सरकार ने भारतीयों का मताधिकार समाप्त करने के लिए एक विधेयक पेश करने का प्रस्ताव रखा। गाँधी ने तुरंत इस बिल के अशुभ प्रभावों को समझा जो उनके अनुसार उनके ताबूतों में पहली कील थी और उन्होंने अपने हमवतन लोगों को संबंधित कार्रवाई द्वारा इसका विरोध करने की सलाह दी। भारतीय समुदाय ने उनके बिना अपनी असहायता के बारे में बताया और उनसे एक और महीने वहीं रुकने का आग्रह किया। गाँधी ने इसे मान लिया, पर उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि यह एक महीना, बीस साल के बराबर होगा।

अपनी सहज ईमानदारी के साथ गाँधी ने तुरत विदाई रात्रिभोज को एक्शन कमेटी में बदल दिया और नटाल विधान सभा के लिए एक याचिका का मसौदा तैयार किया। याचिका की प्रतियां बनाने और पूरी रात हस्ताक्षर करने के लिए स्वयंसेवक आगे आए। अगली सुबह याचिका को प्रेस में अच्छा प्रचार मिला। हालांकि बिल पास हो गया था। इससे विचलित हुए बिना, गाँधी ने लॉर्ड रिपन, जो उपनिवेशों के राज्य सचिव थे, के लिए एक और याचिका तैयार की। एक महीने के भीतर दस हजार हस्ताक्षरों वाली विशाल याचिका लॉर्ड रिपन को भेजी गई और वितरण के लिए एक हजार प्रतियां छापी गई। यहां तक कि टाइम्स ने भारतीय दावों की वैधता को स्वीकार किया और पहली बार भारत में लोगों को दक्षिण अफ्रीका में अपने देशवासियों की कठिनाइयों का पता चला। गाँधी ने महसूस किया कि अगर उन्हें दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास का विस्तार करना है तो वे अपनी सार्वजनिक सेवाओं के लिए पारिश्रमिक स्वीकार नहीं करेंगे और अनुमान लगाया कि उन्हें अपने खर्चों को पूरा करने के लिए लगभग 300 पाउण्ड की आवश्यकता है। इसलिए उन्होंने नेटाल के सर्वोच्च न्यायालय के एक वकील के रूप में नामांकन करवा लिया।

दक्षिण अफ्रीका में तीन साल के प्रवास से गाँधी समझ गए कि वह अब एक ऐसा कारण नहीं छोड़ सकते जिसके लिए उन्होंने इतनी गर्मजोशी से काम लिया हो। इसलिए उन्होंने भारत का दौरा करने और अपने परिवार को वापस लाने के लिए छह महीने की छुट्टी ली, लेकिन यह कोई छुट्टी नहीं थी। उन्होंने भारत के कई शहरों का दौरा किया और दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के बारे में विभिन्न अखबारों के संपादकों और प्रतिष्ठित लोगों को अवगत कराया। उन्होंने इस विषय पर एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की। हालांकि यह भारतीय मामले का बहुत ही शांत और संयमित बयान था, लेकिन रायटर द्वारा इस बारे में विकृत खबर ने नेटाल में काफी गलतफहमी पैदा कर दी, जिसका बाद में अप्रिय परिणाम हुआ।

जब राजकोट में प्लेग फैल गया, तो गाँधी ने वहां स्वेच्छा से सबकी सेवा की और अछूतों के घरों सहित हर इलाके का दौरा किया, शौचालय का निरीक्षण किया और निवासियों को स्वच्छता के बेहतर तरीके सिखाए। इस दौरान, उनका बदरुद्दीन तैयबजी, फिरोजशाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और महान देशभक्त, तिलक जैसे दिग्गज नेताओं के साथ परिचय हुआ। वह बुद्धिमान और नेकदिल गोखले से मिले और उनसे बहुत प्रेरित हुए। उन्होंने बंबई

में एक बड़ी जनसभा को संबोधित किया। वह कलकत्ता में भी भाषण देने वाले थे, लेकिन इससे पहले नेटाल में भारतीय समुदाय की ओर से भेजे गए तत्काल टेलीग्राम के कारण उन्हें नवंबर 1896 में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ डरबन के लिए वापस रवाना होना पड़ा। जब जहाज डरबन पहुँचा, तो उसे पाँच दिनों तक अलग-थलग रखा गया। यूरोपीय समुदाय, भारत में गाँधी की गतिविधियों के विकृत खबरों और एक अफवाह से कि वह नेटाल में बसने के लिए वे काफी भारतीयों को जहाज पर ला रहे थे, गुस्से में थे और सभी यात्रियों को डूबो देने की धमकी दे रहे थे। हालाँकि, गाँधी के परिवार सहित यात्रियों को बिना किसी परेशानी के वहां उतरने की अनुमति दे दी गई, लेकिन जब गाँधी थोड़ी देर बाद नीचे आए और उनकी पहचान का पता चला, तो पूरी भीड़ उन पर टूट पड़ी, उनपर लात, घूंसों और पत्थरों से हमला किया और संभवतः उन्हें मार ही डाला होता यदि एक बहादुर अंग्रेज महिला उनके बचाव में आगे नहीं आती। इस कायरतापूर्ण हमले की खबर को व्यापक प्रचार मिला और उपनिवेशों के ब्रिटिश सेक्रेटरी ऑफ स्टेट्स जोसेफ चेम्बरलेन ने नेटाल के उन सभी लोगों के खिलाफ मुकदमा चलाने का आदेश दिया जो इस घटना के लिए जिम्मेदार थे। गाँधी ने अपने हमलावरों की पहचान करने और उन पर मुकदमा चलाने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि उन्हें गुमराह किया गया था और उन्हें यकीन था कि जब उन्हें सच्चाई का पता चलेगा, तो उन्होंने जो किया उसके लिए उन्हें खेद होगा।

यह दक्षिण अफ्रीका में इस दूसरी अवधि के दौरान था कि गाँधी के जीवन जीने की पद्धति में एक बदलाव आया, हालांकि यह क्रमिक था। पहले, वह एक अंग्रेजी बैरिस्टर के मानक को बनाए रखने की कोशिश करते थे। पर अब उन्होंने अपनी इच्छानुसार और अपने खर्चों को कम करने के लिए अपने देशी तरीके से रहना शुरू किया। उन्होंने कपड़ा धोना सीखा और अपने कपड़े स्वयं धोने लगे। वह अब अपने सफेद कपड़ों में खुद स्टार्च डालते और इस्तिरी भी खुद ही करते थे। उन्होंने खुद अपने बाल भी काटना सीखा। वे न केवल अपने स्वयं के चैंबर-पॉट साफ करते बल्कि अक्सर अपने मेहमानों के भी साफ किया करते थे। स्व-सहायता से असंतुष्ट, एक वकील की व्यस्तता और सार्वजनिक कार्य करने के बावजूद, एक धर्मार्थ अस्पताल में कंपाउंडर के रूप में प्रतिदिन दो घंटे वे मुफ्त सेवा किया करते थे। उन्होंने अपने दो बेटों और एक भतीजे को घर पर पढ़ाना शुरु किया। उन्होंने नर्सिंग पर किताबें पढ़ीं और वास्तव में दाई के रूप में सेवा की जब उनके चौथे और आखिरी बेटे का जन्म हुआ।

1901 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भाग लेने के लिए गाँधी ने फिर से भारत का दौरा किया और दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रस्ताव के मंजूर किए जाने पर संतुष्ट थे। हालांकि वह कांग्रेस से निराश थे। उन्होंने महसूस किया कि भारतीय राजनेता बातें बहुत करते थे पर काम बहुत कम किया करते थे। उन्होंने देखा कि उनकी चर्चाओं में अंग्रेजी को काफी महत्व दिया जाता था और शिविर में शौचालय की विषम स्थिति को देखकर वो काफी परेशान हुए। कलकत्ता में कुछ दिनों तक गोखले के अतिथि के रूप में रहने के बाद, वे भारत की यात्रा पर निकले और गरीबों की आदतों और कठिनाइयों का अध्ययन करने के लिए रेल की तीसरी श्रेणी में यात्रा की। उन्होंने पाया कि भारत में यात्रियों की गंदी आदतों और रेल अधिकारियों की अत्यधिक उदासीनता की वजह से रेल के तीसरे श्रेणी की हालत बहुत दयनीय थी, उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षित व्यक्तियों को स्वेच्छा से तीसरी श्रेणी में यात्रा करनी चाहिए ताकि लोगों की आदतों में सुधार हो सके और उनकी वैध शिकायतों का समाधान हो सके। निदान के साथ-साथ सुझाए गए उपाय सभी सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के लिए उनके दृष्टिकोण की विशेषता थी - अधिकारों के साथ कर्तव्यों पर समान जोर। गाँधी को भारत में काम करना अभी तक नसीब नहीं हुआ था। उन्होंने बॉम्बे में वकालत शुरु भी नहीं की थी कि नेटाल में भारतीय समुदाय

के एक केबलग्राम ने उन्हें वहां बुलाया। उन्होंने उन्हें वचन दिया था कि अगर जरूरत पड़ी तो वह लौट आएंगे। इसलिए भारत में अपने परिवार को छोड़कर वह फिर से दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हो गए। उन्हें जोसेफ चैंबरलेन के सामने भारतीय केस रखने के लिए बुलाया गया था जो उस दौरान दक्षिण अफ्रीका का दौरा कर रहे थे। चैंबरलेन ने गाँधी और भारतीयों की याचिका नहीं सुनी। ट्रांसवाल की स्थिति भारतीयों के लिए प्रतिकूल थी, इसलिए गाँधी ने सुप्रीम कोर्ट के वकील के रूप में जोहान्सबर्ग में स्थानांतरित होने का फैसला किया। वह यूरोपीय अहंकार को चुनौती देने और अन्याय का विरोध करने के लिए विशेष रूप से रुके थे। उनके दिल में कोई द्वेष नहीं था, बल्कि केवल गलत को सही करना चाहते थे।

"इंडियन ओपीनियन" का वित्त पोषण

1903 के मध्य में उन्हें लगा कि यदि दक्षिण अफ्रीकी भारतीयों को एक-दूसरे के साथ और अपने यूरोपीय साथी - उपनिवेशवादियों के साथ एकजुट करना हो तो लोगों का राजनीतिक और सामाजिक रूप से शिक्षित होना जरूरी था, और इसके लिए एक समाचार पत्र का प्रकाशन आवश्यक था; काफी परामर्श के बाद, उन्होंने संपादक के रूप में स्वर्गीय श्री एमएच नजर के साथ इसका उद्घाटन किया जिसके लिए उन्होंने पूंजी का बड़ा हिस्सा प्रदान किया, और इस प्रकार "इंडियन ओपिनियन" का जन्म हुआ।

गाँधी अक्सर इस तरह के जीवन के बारे में सोचते थे जिससे वो मानवता की सेवा के लिए पूरी तरह से समर्पित हो सकें। उन्होंने महसूस किया कि पूर्ण आत्म-नियंत्रण या ब्रह्मचर्य इस उद्देश्य के लिए आवश्यक था, क्योंकि कोई भी "शरीर और आत्मा के बिना नहीं रह सकता"। इसलिए, 1906 में जुलु अभियान से वापस आने के तुरंत बाद, उन्होंने अपने चुनिंदा दोस्तों के समूह को पूर्ण ब्रह्मचर्य का संकल्प लेने की घोषणा की। यह कदम भगवद गीता के प्रभाव में लिया गया था, जिसे वह कुछ समय से हर सुबह नियमित रूप से पढ़ते थे और उसे याद करने के लिए प्रतिबद्ध थे। गीता का एक और सिद्धांत जिसने उन्हें गहराई से प्रभावित किया वह था "अनासक्ति"। जैसे ही उन्हें अपने निहितार्थ का अहसास हुआ, उन्होंने अपनी बीमा पॉलिसी जो 10,000 रुपए की थी उसे गिर जाने दिया। इसके बाद वह सिर्फ ईश्वर में विश्वास करने लगे। गीता के बाद, जिस पुस्तक ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, वह रस्किन की अन्टू दिस लास्ट थी, जिसे उनके मित्र पोलाक ने उन्हें 1904 में पढ़ने के लिए दिया था। रस्किन ने क्या उपदेश दिया, या गाँधी ने उसे जो समझा उसमें शारीरिक श्रम की नैतिक गरिमा थी और समानता के आधार पर रहने वाले समुदाय की सुंदरता थी। चूंकि, रस्किन के विपरीत, गाँधी एक आदर्श की सराहना तब तक नहीं कर सकते थे, जब तक उसका अभ्यास खुद न कर लें, इसलिए उन्होंने तुरंत एक खेत खरीदने का निर्णय लिया जहां ऐसा जीवन जीया जा सकता था। इस प्रकार डरबन से कुछ चौदह मील की दूरी पर प्रसिद्ध फीनिक्स कॉलनी सौ एकड़ भूमि पर स्थापित की गई, लेकिन गाँधी फीनिक्स में लंबे समय तक नहीं रह सके क्योंकि अपने कार्यवश उन्हें जोहान्सबर्ग जाना पड़ा, जहां बाद में, उन्होंने इसी तरह के आदर्शों पर एक और कॉलनी की स्थापना की जो शहर से इक्कीस मील की दूरी पर था। उन्होंने इसे टॉल्सटॉय फार्म कहा। इन दोनों आश्रमों में, जैसा कि भारत में आध्यात्मिक आदर्शों पर बने बस्तियों को जाना जाता है, खाना पकाने से लेकर मैला ढोने तक का काम वहां रहनेवाले खुद किया करते थे। नैतिक और शारीरिक स्वच्छता के एक सख्त कोड द्वारा प्रबलित जीवन की अत्यधिक सादगी वहां देखी जा सकती थी। वहां किसी प्रकार की दवा नहीं रखी गई थी क्योंकि गाँधी, जिन्होंने पहले एडॉल्फ जस्ट की रिटर्न टू नेचर को पढ़ा था, प्राकृतिक उपचार में गहरा विश्वास करते थे। वहां रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को कुछ हस्तकला का अभ्यास करना पड़ता था। गाँधी ने खुद सैंडल बनाना सीखा। 1907 के बाद से गाँधी और शेष भारतीय जनरल स्मट्स के काले

अधिनियम से संघर्ष कर रहे थे। गाँधी को तीन बार जेल जाना पड़ा। जेल में प्रार्थना करने और निजीकरण के दौर से गुजरने का यह समय था कि गाँधी आगे के संघर्ष के लिए खुद को सख्त करने में सक्षम हुए, जो भविष्य में उनका इंतजार कर रहा था।

उन्हें इस बात का आभास हो गया था कि दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ जल्द ही या बाद में संघर्ष होना तय है और अपने स्वयं के व्यक्तिगत अनुभव से जानते थे कि कोई भी क्रूर बल उस मनुष्य की भावना को कमजोर नहीं कर सकते जो पीड़ा सहने को तैयार हो। वह जो खुद कर सकते थे उसे वह दूसरों को करने के लिए प्रशिक्षित भी कर सकते थे। व्यक्तिगत प्रतिरोध का विस्तार किया जा सकता है और युद्ध के एक नैतिक समकक्ष के अभियोजन में एक बड़े संघर्ष में संगठित किया जा सकता है। उन्होंने टॉल्स्टॉय और थोरो के 'सविनय अवज्ञा' शब्द बारे में पढ़ा था पर यह गाँधी की अहिंसा की अपनी अवधारणा को प्रेम की सकारात्मक शक्ति के रूप में व्यक्त नहीं करता था, न ही उन्हें 'निष्क्रिय प्रतिरोध' वाक्यांश का उपयोग पसंद था। उनके दिमाग में अब यह अवधारणा स्पष्ट रूप से तैयार हो गई थी, लेकिन इसका वर्णन करने के लिए शब्द वांछित था। उनके चचेरे भाई मगनलाल गाँधी ने सदाग्रह का सुझाव दिया, जिसका अर्थ है सत्य के लिए उपवास रखना या किसी पुनीत कार्य में दृढ़ता। गाँधी को यह शब्द पसंद आया और इसे उन्होंने सत्याग्रह में बदल दिया। इस प्रकार राजनीतिक कार्रवाई में गाँधी का सबसे मूल विचार विकसित हुआ।

1911 में चीजें सामान्य होने लगीं, लेकिन केंद्र सरकार अपने वादे से मुकर गई और सभी गैर-ईसाई विवाहों को भी रद्द कर दिया और अब कस्तूरबाई भी इस संघर्ष में शामिल हो गईं। गाँधी का अहिंसात्मक विरोध का सत्याग्रह तेजी से फैला। जनवरी, 1914 में गाँधी और स्मट्स के बीच एक औपबंधिक समझौता किया गया और मुख्य भारतीय मांगों को भी मान लिया गया। 1914 में गोखले के अनुरोध पर गाँधी भारत रवाना हुए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) महात्मा गाँधी के दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों के अधिकारों के संघर्ष में योगदान का उल्लेख करें।

....

....

....

....

....

1.5 भारत में संघर्ष

अप्रैल 1893 में, गाँधी दक्षिण अफ्रीका, भाग्य की तलाश में एक युवा और अनुभवहीन बैरिस्टर के रूप में रवाना हुए थे। जनवरी 1915 में वह आखिरकार बिना किसी संपत्ति और केवल एक महत्वाकांक्षा और उद्देश्य के साथ भारत लौट आए कि अपने लोगों की सेवा करनी है। वह भारत, उसके लोगों या उनकी समस्याओं को अच्छी तरह से जानते भी नहीं थे। इसलिए उन्होंने अपने 'राजनीतिक गुरु' गोखले से वादा किया, कि वह भारत में एक साल देश के अध्ययन में बिताएंगे, 'अपने कान खुले रहेंगे लेकिन उनका मुंह बंद रहेगा'। एक

साल भारत में घूमने के बाद, गाँधी अहमदाबाद के बाहरी इलाके में, साबरमती नदी के किनारे रहने लगे, जहाँ उन्होंने मई 1915 में एक आश्रम की स्थापना की। उन्होंने इसे 'सत्याग्रह आश्रम' का नाम दिया।

भारत में गाँधी का पहला सार्वजनिक संबोधन फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह के अवसर पर था, जिसमें कई विशिष्ट व्यक्तियों और राजकुमारों और स्वयं वायसराय ने भाग लिया था। अंग्रेजी में बोलते हुए उन्होंने अपने देशवासियों को उनके लिए विदेशी भाषा में संबोधित करने के लिए मजबूर होने पर 'गहरा अपमान और शर्म' व्यक्त करते हुए उन सभी को चौंका दिया।

भारत में उनका पहला सत्याग्रह बिहार के चंपारण में हुआ, जहाँ वे 1917 में गरीब किसानों के अनुरोध पर उस जिले के बहुत शोषित किसानों की शिकायतों के बारे में पूछताछ करने गए थे। यहां के किसानों को ब्रिटिश इंडिगो प्लांटर्स ने अपनी जमीन के 15 फीसदी हिस्से पर नील की खेती करने और पूरी फसल को किराए पर देने के लिए मजबूर कर दिया था। इलाके के नील के किसानों को गाँधी में एक चौंपियन दिखा और गाँधी ने उन्हें रिहा करने के लिए मजिस्ट्रेट को शर्मिंदा किया। इस घटना ने गाँधी को शांतिपूर्ण सत्याग्रह और जनता की शक्ति की सीख दी। जिस समिति के सदस्य गाँधी थे, उसकी रिपोर्ट किराए वाले किसानों के पक्ष में गई। भारत में सत्याग्रह में उनके पहले प्रयोग की सफलता ने अपने देश में गाँधी की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। इसी तरह, गाँधी ने अहमदाबाद के कपड़ा मिल श्रमिकों का साथ दिया। उन्होंने भोजन को तब तक छूने से इनकार कर दिया जब तक मामला सौहार्दपूर्ण ढंग से हल नहीं हो गया। तीन दिनों के बाद दोनों पक्षों ने खुशी से मध्यस्थता पर सहमति व्यक्त की।

जल्द ही गुजरात के खेड़ा जिले में कृषि संकट शुरू हो गया। भुखमरी के कगार पर आए किसानों को सरकार द्वारा सामान्य कर का भुगतान करने के लिए मजबूर किया जा रहा था। गाँधी ने सत्याग्रह की सलाह दी और सभी किसानों को, साथ ही साथ गरीबों को भी, किसी भी कर का भुगतान न करने का संकल्प लेने के लिए कहा, जब तक उन्हें राहत न दी जाए। नो-टैक्स अभियान लगभग चार महीने तक चला, जिसके अंत में सरकार ने गरीब किसानों के लिए कर को निलंबित कर दिया।

1.5.1 प्रथम विश्व युद्ध के बाद खिलाफत आंदोलन

गाँधी प्रथम विश्व युद्ध में लड़ाई के दौरान अंग्रेजों का समर्थन करने के लिए सहमत हो गए थे, लेकिन भारत को स्वतंत्रता देने के अपने वादे को पूरा करने में अंग्रेज असफल रहे, और इसके परिणामस्वरूप खिलाफत आंदोलन चलाया गया। गाँधी ने महसूस किया कि हिंदुओं और मुसलमानों को अंग्रेजों से लड़ने के लिए एकजुट होना चाहिए और दोनों समुदायों से एकजुटता और एकता दिखाने का आग्रह किया, हालांकि उनके उद्देश्यों पर कई हिंदू नेताओं ने सवाल उठाए थे। कई नेताओं के विरोध के बावजूद, गाँधी मुसलमानों का समर्थन जुटाने में कामयाब रहे, लेकिन जैसे ही खिलाफत आंदोलन अचानक समाप्त हुआ, उनके सभी प्रयास बर्बाद हो गए।

1.5.2 असहयोग आंदोलन

असहयोग आंदोलन अंग्रेजों के खिलाफ गाँधी के सबसे महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक था। गाँधी ने अपने साथी देशवासियों से अंग्रेजों का साथ देना बंद करने का आग्रह किया। उनका मानना था कि भारतीयों के सहयोग से ही अंग्रेज भारत पर शासन करने में सफल हुए। उन्होंने अंग्रेजों को रौलट एक्ट पारित न करने की चेतावनी दी, लेकिन उन्होंने उनकी

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बात पर ध्यान नहीं दिया और अधिनियम पारित कर दिया। जैसे ही इसकी घोषणा की गई, गाँधी ने सभी से अंग्रेजों के खिलाफ सविनय अवज्ञा (बहिष्कार, धरना आदि) शुरू करने को कहा। अंग्रेजों ने बलपूर्वक सविनय अवज्ञा आंदोलन को दबाना शुरू कर दिया। उन्होंने लोगों से एकता, अहिंसा और मानव जीवन के प्रति सम्मान दिखाने का आग्रह किया, लेकिन अंग्रेजों ने इस पर आक्रामक प्रतिक्रिया व्यक्त की और कई प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया। 13 अप्रैल 1919 को, एक ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर ने, अमृतसर के जलियांवाला बाग में अपनी सेना को महिलाओं और बच्चों सहित एक शांतिपूर्ण सभा में गोली चलाने का आदेश दिया। इसके परिणामस्वरूप, सैकड़ों निर्दोष हिंदू और सिख नागरिक मारे गए। इस घटना को 'जलियांवाला बाग नरसंहार' के नाम से जाना जाता है। निर्दोषों के इस कायरतापूर्ण नरसंहार के बाद पंजाब में मार्शल लॉ की घोषणा के साथ ही सामूहिक गिरफ्तारी, डंडा से पीटने जैसे अमानवीय आदेश दिए गए। उन दिनों की घटनाओं को सर वेलेंटाइन चिरोल ने 'ब्रिटिश भारत के इतिहास में काला दिन' कहा है, जो भारतीय संघर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। ब्रिटेन की नैतिक प्रतिष्ठा को एक घातक झटका लगा। इसके बाद, गाँधी भारतीय राजनीति के युद्ध के मैदान से दूर नहीं रह सके।

असहयोग की अवधारणा बहुत लोकप्रिय हो गई और पूरे भारत में तेजी से फैलने लगी। गाँधी ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया और स्वराज (स्वतंत्रता) पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने लोगों से ब्रिटिश वस्तुओं का उपयोग बंद करने का आग्रह किया। उन्होंने लोगों को सरकारी रोजगार से इस्तीफा देने, ब्रिटिश संस्थानों में पढ़ाई छोड़ने और अदालतों में कानून का अभ्यास बंद करने को भी कहा। हालांकि, फरवरी 1922 में उत्तर प्रदेश के चौरी चौरा शहर में हुई हिंसक झड़प ने गाँधी को अचानक आंदोलन को बंद करने के लिए मजबूर कर दिया। गाँधी को 10 मार्च 1922 को गिरफ्तार किया गया था और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। उन्हें छह साल के कारावास की सजा सुनाई गई थी, लेकिन केवल दो साल की सजा दी गई थी।

1.5.3 साइमन कमीशन और नमक सत्याग्रह

1920 के दशक के दौरान, महात्मा गाँधी ने स्वराज पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच मतभेदों को हल करने पर ध्यान केंद्रित किया। 1927 में, ब्रिटिश ने सर जॉन साइमन को एक नए संवैधानिक सुधार आयोग के प्रमुख के रूप में नियुक्त किया, जिसे 'साइमन कमीशन' के नाम से जाना जाता था। कमीशन में एक भी भारतीय नहीं था। इससे असहमत होकर, गाँधी ने दिसंबर 1928 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें ब्रिटिश सरकार से भारत को प्रभुत्व का दर्जा देने का आह्वान किया गया। यदि अंग्रेजों ने इस मांग का पालन नहीं किया, तो उन्हें देश के लिए पूर्ण स्वतंत्रता या 'पूर्ण स्वराज' की मांग को लेकर अहिंसा के एक नए विरोध का सामना करना पड़ेगा। इन मांगों को अंग्रेजों ने अस्वीकार कर दिया। भारतीय ध्वज को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा 31 दिसंबर 1929 को रावी नदी के तट पर लाहौर अधिवेशन में फहराया गया था। 26 जनवरी, 1930 को भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में भी मनाया गया। अंग्रेजों ने इन मांगों को नहीं माना और जल्द ही उन्होंने नमक पर कर लगा दिया और इस तरह नमक पर कर लगाने का विरोध करते हुए मार्च 1930 में 'नमक सत्याग्रह' शुरू किया गया। गाँधी ने मार्च में अपने अनुयायियों के साथ दांडी यात्रा की शुरुआत की और अहमदाबाद से दांडी की पैदल यात्रा की शुरुआत की। यह विरोध सफल रहा और मार्च 1931 में गाँधी-इरविन समझौता हुआ।

1.5.4 गोल मेज सम्मेलन

गाँधी-इरविन समझौते के बाद, गाँधी को अंग्रेजों द्वारा गोल मेज सम्मेलनों में आमंत्रित किया गया था। जबकि गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए दबाव डाला, ब्रिटिश ने गाँधी के

उद्देश्यों पर सवाल उठाया और उनसे पूरे राष्ट्र के लिए बात नहीं करने को कहा। उन्होंने अछूतों का प्रतिनिधित्व करने के लिए कई धार्मिक नेताओं और बी आर अंबेडकर को आमंत्रित किया। अंग्रेजों ने विभिन्न धार्मिक समूहों के साथ-साथ अछूतों को कई अधिकारों का वादा किया। इस डर से कि इस कदम से भारत का भविष्य में विभाजन होगा, गाँधी ने उपवास करके इसका विरोध किया। दूसरे सम्मेलन के दौरान अंग्रेजों के असली इरादों के बारे में जानने के बाद, उन्होंने एक और सत्याग्रह शुरू किया, जिसके लिए उन्हें एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया।

1.5.5 भारत छोड़ो आंदोलन

दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत होते ही, महात्मा गाँधी ने भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए अपना आंदोलन तेज कर दिया। उन्होंने अंग्रेजों से भारत छोड़ने के लिए एक संकल्प का मसौदा तैयार किया। 'भारत छोड़ो आंदोलन' महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा शुरू किया गया सबसे आक्रामक आंदोलन था। गाँधी को 9 अगस्त 1942 को गिरफ्तार किया गया था और दो साल तक पुणे के आगा खान पैलेस में रखा गया था, इस दौरान उनकी पत्नी कस्तूरबा और उनके सचिव, महादेव देसाई की मृत्यु हो गई। 1943 के अंत तक भारत छोड़ो आंदोलन समाप्त हो गया, जब अंग्रेजों ने यह संकेत दिया कि पूरी सत्ता भारत के लोगों को हस्तांतरित कर दी जाएगी। गाँधी ने आंदोलन को बंद कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप 100,000 राजनीतिक कैदी रिहा किए गए।

1.5.6 स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

ब्रिटिश कैबिनेट मिशन द्वारा 1946 में पेश किए गए स्वतंत्रता सह विभाजन प्रस्ताव को महात्मा गाँधी के विरोध के बावजूद कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया था। सरदार पटेल ने गाँधी को आश्वस्त किया कि गृह युद्ध से बचने का यह एकमात्र तरीका है और उन्होंने अनिच्छा से अपनी सहमति दी। भारत की स्वतंत्रता के बाद, गाँधी ने हिंदुओं और मुसलमानों की शांति और एकता पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने दिल्ली में अपना अंतिम उपवास सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए किया।

1.5.7 महात्मा गाँधी की हत्या

महात्मा गाँधी का प्रेरक जीवन 30 जनवरी 1948 को समाप्त हुआ, जब उन्हें एक कट्टरपंथी, नाथूराम गोडसे ने नजदीक से गोली मार दी। नाथूराम एक हिंदू कट्टरपंथी था, जिसने पाकिस्तान को विभाजन भुगतान देकर भारत को कमजोर करने के लिए गाँधी को जिम्मेदार ठहराया। गोडसे और उनके सह-साजिशकर्ता, नारायण आप्टे पर बाद में मुकदमा चला और उन्हें दोषी ठहराया गया। 15 नवंबर 1949 को उन्हें मृत्युदंड दे दिया गया।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गाँधी द्वारा चलाए गए विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों का उल्लेख करें।

....

....

....

1.6 सारांश

महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा, शाकाहार, ब्रह्मचर्य, सामान्य जीवन और ईश्वर में भरोसा रखने का पाठ पढ़ाया। यद्यपि उन्हें भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले व्यक्ति के रूप में हमेशा याद किया जाएगा, उनकी सबसे बड़ी विरासत अंग्रेजों के खिलाफ उनकी लड़ाई में इस्तेमाल किए जाने वाले तरीके हैं। इन तरीकों ने अन्याय के खिलाफ अपने संघर्ष में कई अन्य विश्व नेताओं को भी प्रेरित किया। उनकी प्रतिमाएं पूरी दुनिया में स्थापित हैं और उन्हें भारतीय इतिहास में सबसे प्रमुख व्यक्तित्व माना जाता है। महात्मा शब्द को अक्सर गाँधी के पहले नाम के रूप में पश्चिम में जाना जाता है, जो सही नहीं है। उनके असाधारण जीवन ने साहित्य और कला के क्षेत्र में असंख्य कार्यों को प्रेरित किया। महात्मा के जीवन पर कई फिल्में और वृत्तचित्र बनाए गए हैं। स्वतंत्रता के बाद, गाँधी की छवि भारतीय कागजी मुद्रा पर मुख्य रूप से छापी गई।

1.7 संदर्भ ग्रंथ

फिश्चर, लूइस, *महात्मा गाँधी : हिज लाइफ एण्ड टाइम्स*, भारतीय विद्या भवन, देहली, 2012

'गाँधी गोज टू इंगलैंड टू स्टडी लॉ', इण्डो अमेरिकन न्यूज, अक्टूबर 6, 2011 http://www.indoamerican-news.com/gandhi-goes-to-england-to-study-law/.

गाँधी, महात्मा, *माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ*, राजपाल पब्लिशिंग, देहली, 2015

गाँधी, राजमोहन, *मोहनदास : ट्रू स्टोरी ऑफ ए मैन, हिज पीपल एण्ड ऐन एम्पायर*, पेंगुइन, देहली, 2007

'महात्मा गाँधी, , *महात्मा गाँधी ऐट द बिगनिंग ऑफ ट्वेंटी-फर्स्ट सेंचुरी*, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, देहली, 2006

'महात्मा गाँधी', कल्चरल इण्डिया, एन.डी http://www.culturalindia.net/indian-history/modern-history/mahatma-gandhi.html.

पारेख भूखी, *गाँधी : ए वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 2001

पायने, रॉबर्ट, *लाइफ एण्ड डेथ ऑफ महात्मा गाँधी*, रूपा पब्लिकेशंस, देहली, 1997

पॉवेल, बैरी, *गाँधी : फैक्ट्स एण्ड सप्राइजिंग अननून स्टोरीज*, बी एण्ड बी पब्लिशिंग, मैरीलैं, 2015

श्रॉफ, ऐन्ने ई., *महात्मा गाँधी (20 सेंचुरी बायोग्राफीज)*, सैड्डलबैक पब्लिशिंग, कैलिफोर्निया, 2008

'सोजर्न इन इंगलैंड एण्ड रिटर्न टू इण्डिया', इंसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, एन.डी. https://www.britannica.com/biography/Mahatma-Gandhi/Sojourn-in-England-and-return-to-India.

वर्मा, रविन्द्र, गाँधी : ए बायोग्राफी फॉर चिल्ड्रेन एण्ड बिगनर्स, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 2001

वॉलपोर्ट, स्टैन्ले, गाँधीज पैशन; द लाइफ एण्ड लिगेसी ऑफ महात्मा गाँधी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 2002

1.8 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) अपने उत्तर में गाँधी की प्रारंभिक शिक्षा में अपने परिवार, मित्रों और धर्म के प्रभाव का उल्लेख करें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) सत्याग्रह आंदोलन के महत्व और भारतीय सोच का विश्व के सोच पर पड़ने वाले प्रभाव का जिक्र करें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) एनसीएम, सीडीएम और भारत छोड़ो आंदोलन के योगदान पर प्रकाश डालें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 गाँधी की आधुनिक सभ्यता और वैकल्पिक आधुनिकता की अवधारणा

संरचना

2.1 प्रस्तावना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

2.2 गाँधी का सभ्यता का विचार

2.3 आधुनिक सभ्यता और भारत की स्वतंत्रता का नुकसान

2.4 औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण की आलोचना

2.5 आधुनिकता के आलोचक के रूप में शिक्षा

2.6 सारांश

2.7 अभ्यास प्रश्न

2.8 संदर्भ ग्रंथ

2.9 अपनी प्रगति की जांच करें के उत्तर

2.1 प्रस्तावना

महात्मा गाँधी एक जन नेता थे और उनकी मान्यताओं ने आने वाली पीढ़ियों को भी प्रभावित किया। जैसा कि यह माना जाता है कि सभ्यता की भावना का होना एक अच्छा विचार है। उनके मन में पश्चिमी सभ्यता और भारतीय सभ्यता के बीच का अंतर काफी स्पष्ट था। वह जीवन जीने की पश्चिमी विधा और नैतिकता की भावना के प्रबल आलोचक थे। उन्होंने यह कभी नहीं माना कि पश्चिम द्वारा वैज्ञानिक और तकनीकी विकास से उनकी सही मायने में प्रगति हुई है। गाँधी द्वारा अंग्रेजों और पश्चिमी भौतिकवाद के खिलाफ उनके लंबे राजनीतिक और दार्शनिक संघर्ष में इस्तेमाल किए गए अधिकांश शब्द और प्रतीक एक तरफ भारतीय परंपरा के प्रतीक थे और दूसरी तरफ आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के आलोचक थे। इन शब्दों और प्रतीकों के एक से अधिक अर्थ हैं। वे कई संदेश भी देते हैं और उनमें से सबसे महत्वपूर्ण है आधुनिकता की आलोचना। इन भारतीय शब्दों और प्रतीकों का उपयोग गाँधी द्वारा राष्ट्रवाद, औद्योगीकरण और पश्चिमी शिक्षा की तीन महत्वपूर्ण अवधारणाओं की आलोचना करने के लिए किया गया था, जो भारत की आधुनिकता का मूल आधार हैं। इससे यह पता चलता है कि गाँधी ने 'आधुनिक सभ्यता' को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, जिसे उन्होंने 'पश्चिमी सभ्यता' के रूप में निर्दिष्ट और वर्णित किया था। उन्होंने सक्रिय रूप से भारतीय शब्दों, प्रतीकों, अवधारणाओं, परंपराओं, मूल्यों और दर्शन के आधार पर उनका विरोध किया।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

यह इकाई आपको इसे समझने में सक्षम करेगी

- आधुनिक पश्चिमी और भारतीय सभ्यता पर गाँधी के विचार और दृष्टिकोण।
- औद्योगीकरण और मशीनीकरण पर उनकी आलोचना।

डॉ सौरभ, असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू, नई दिल्ली–67 एवं सुरुचि अग्रवाल, रिसर्च स्कॉलर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25

- आधुनिक सभ्यता के विरोध में खादी जैसे भारतीय प्रतीक का उपयोग।
- भारतीय शिक्षा पर उनके विचार

2.2 गाँधी का सभ्यता का विचार

गाँधी ने अपने विचारों और सभ्यता की अवधारणाओं, पश्चिमी सभ्यता की सकारात्मक और नकारात्मक विशेषताओं, आधुनिक सभ्यता और भारतीय और पश्चिमी सभ्यताओं के बीच तुलना के बारे में विशेष रूप से अपने भाषणों में बताया और 1909 में हिंद स्वराज में गुजराती भाषा में लंदन से दक्षिण अफ्रीका की वापसी यात्रा के दौरान लिखा। यह दक्षिण अफ्रीका में गाँधी द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक, इंडियन ओपिनियन के गुजराती संस्करण में उसी वर्ष दो किस्तों में प्रकाशित हुआ। इसे 1910 में गुजराती में एक पुस्तिका के रूप में जारी किया गया जिसे ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा देशद्रोही सामग्री होने के आरोप में प्रतिबंधित कर दिया गया था। शाही अधिकारियों के इस कदम की परवाह न करते हुए, गाँधी ने बाद में हिंद स्वराज में व्यक्त विचारों को विकसित किया और उन्हें जीवन भर नए योगदानों से समृद्ध करते रहे। उनके विचार मुख्य रूप से घटनाओं पर उनकी प्रतिक्रिया और कई सामाजिक सुधारों और राजनीतिक आंदोलनों को प्रोत्साहन देने के उनके प्रयास से निकले। उनके विचारों में एकरूपता विद्यमान थी और गाँधी के विचारों में यह एकरूपता एक नैतिक दृष्टिकोण जो खुद के लिए नहीं बल्कि अपने देशवासियों के लिए सक्रिय और रचनात्मक जीवन जीने की इच्छा से उत्पन्न हुई थी।

गाँधी ने हिंसा को गैर-भारतीय माना, इसे भारतीय सभ्यता के विपरीत माना और उन्होंने हिंद स्वराज में अपनी राय स्पष्ट की। एक अर्थ में, हिंद स्वराज का उद्देश्य गाँधीवाद के सत्याग्रह के साथ गाँधी के शुरुआती प्रयोगों से उत्पन्न हिंसा के विकल्प के साथ अराजकतावादी और हिंसा-ग्रस्त भारतीय राष्ट्रवाद का सामना करना था। गाँधी ने उल्लेख किया कि हिंद स्वराज यह दिखाने के लिए लिखा गया था कि उनके देशवासी हिंसा की आत्मघाती नीति का पालन कर रहे थे, और अगर वे अपनी गौरवशाली सभ्यता की ओर लौटते हैं, तो या तो इसे अंग्रेज बाद में अपनाकर भारतीय बन जाएंगे या भारत पर शासन करने में अपनी रुचि खो देंगे। इसके अलावा, हिंद स्वराज में गाँधी ने 'भारतीय समाज की आध्यात्मिक, नैतिक श्रेष्ठता और यूरोपीय राज्यों की हिंसक, राजनीतिक रूप से भ्रष्ट प्रकृति के बीच के द्वंद्व' को चित्रित किया। पश्चिमी सत्ता के 'पाशविक बल' की निंदा करते हुए, गाँधी ने आतंकवादी राष्ट्रवादियों से खुद को दूर कर लिया क्योंकि उन्होंने हिंसा का समर्थन किया जिसे उन्होंने आत्मघाती रणनीति माना क्योंकि यह सत्ताधारी अधिकारियों द्वारा 'संगठित हिंसा' को भड़काएगा।

हिंद स्वराज भौतिक शक्ति पर आधारित पश्चिमी सभ्यता पर एक विस्तृत टिप्पणी थी। हिंद स्वराज में उन्होंने पश्चिमी सभ्यता के हर पहलू पर हमला किया ताकि यह साबित किया जा सके कि यह कितना भयंकर और कितना हानिकारक था। इस पाठ में गाँधी ने आधुनिक सभ्यता के विकल्प के तौर पर कई गतिविधियों के बारे में बताया है जिसका पालन करके भारतीय इस विकल्प को वास्तविकता बना सकते हैं। गाँधी ने आधुनिक सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता को एक समान माना क्योंकि पश्चिम सभी प्रकार की आधुनिकता का उद्‌गम स्थल था। उन्होंने वास्तव में जिसकी आलोचना की, वह पश्चिमी सभ्यता का एक विशेष रूप था, जो प्रबुद्धता और औद्योगिक क्रांति के साथ उभरा। गाँधी के अनुसार, आधुनिक पश्चिमी सभ्यता में लालच, आक्रामकता, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, युद्ध तकनीक, असमानता, शोषण, गरीबी, अपव्यय और विलासिता, शारीरिक सुख, अपरिग्रह व्यक्तिवाद और अश्लीलता, अनैतिकता, वैधता और व्यावसायिक शिक्षा, अलगाव इत्यादि जैसी कई

नकारात्मक तथ्य शामिल हैं। गाँधी ने इन सबकी आलोचना की। आधुनिक मानव जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और नैतिक पहलुओं पर इन तथ्यों के बारे में विस्तार से जानने और उनके प्रभाव की व्याख्या करने से पहले गाँधी की पश्चिमी सभ्यता की समग्र आलोचना जो उनके व्यापक कार्यों में बिखरी हुई है, यह जानना जरूरी है कि गाँधी के भारतीय सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता के बारे में क्या विचार थे? गाँधी के अनुसार, "सभ्यता आचरण की वह विधा है जो मनुष्य को कर्तव्य पथ की ओर अग्रसर करती है। कर्तव्य का प्रदर्शन और नैतिकता का पालन परिवर्तनीय शब्द हैं। नैतिकता का पालन करना हमारे दिमाग और हमारे जुनून पर महारत हासिल करना है। ऐसा करते हुए ही हम खुद को जान सकते हैं।"

हिंद स्वराज में "सभ्यता" नामक अध्याय में, गाँधी ने आधुनिक (पश्चिमी) सभ्यता पर अपने विचारों के बारे में विस्तार से लिखा है। उन्होंने विस्तार से बताया कि 'सभ्यता' शब्द से किस स्थिति का वर्णन किया जाता है। वह लिखते हैं, "इसका असली परीक्षण इस तथ्य में निहित है कि इसमें रहने वाले लोगों के जीवन का उद्देश्य जन कल्याण होता है। यूरोप के लोग आज सौ साल पहले की तुलना में बेहतर-निर्मित घरों में रहते हैं। इसे सभ्यता का प्रतीक माना जाता है, और यह भौतिक खुशी को बढ़ावा देने का भी एक जरिया है। पहले, वे जानवरों के खाल पहनते थे, और भाले को अपने हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे। अब, वे लंबे पतलून पहनते हैं, और, अपने शरीर को सुशोभित करने के लिए, वे विभिन्न प्रकार के कपड़े पहनते हैं, और, भाले के बजाय, वे अपने साथ पांच या अधिक बोर वाले रिवॉल्वर लेकर चलते हैं। अगर किसी देश के लोग, जिन्हें बहुत अधिक कपड़े पहनने की आदत नहीं है, और वे यूरोपीय पहनावा अपनाते हैं, तो माना जाता है कि वे हैवानियत से बाहर हो गए हैं, सभ्य हो गए हैं। पहले, यूरोप में, लोग खुद से अपने खेत जोतते थे। अब, एक आदमी भाप इंजन के माध्यम से बहुत ज्यादा खेतों की जुताई करके अत्यधिक धन अर्जित कर सकता है। यही सभ्यता की निशानी है। पहले, केवल कुछ लोग ही अच्छी पुस्तकें लिखते थे। अब, कोई भी कुछ भी लिखता है और उसे जो पसंद हो छपवा कर लोगों के दिमाग में जहर घोलता है। पहले, लोग ट्रेन के डब्बों में यात्रा करते थे। अब, वे प्रति दिन चार सौ मील या उससे भी ज्यादा की दर से ट्रेनों या हवा के माध्यम से उड़ते हैं। इसे सभ्यता की प्रगति माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि, मानव प्रगति करके हवाई जहाज से यात्रा करके कुछ घंटों में ही दुनिया के किसी भी हिस्से तक पहुंचने में सक्षम होंगे। मनुष्य को अपने हाथों और पैरों का उपयोग करके मेहनत करने की आवश्यकता नहीं होगी। वे एक बटन दबाएंगे, और उनके पास उनके कपड़े होंगे। वे एक और बटन दबाएंगे, और उनके पास अपना अखबार होगा। एक और बटन दबाएंगे, और एक मोटर-कार उनके इंतजार में खड़ी होगी। वे विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन खाएंगे। सब कुछ मशीन द्वारा किया जाएगा। पहले, जब लोग एक-दूसरे से लड़ते थे तो उसका फैसला शारीरिक शक्ति के आधार पर होता था; अब एक बंदूक के साथ पहाड़ी पर बैठे एक आदमी द्वारा हजारों लोगों की जान लेना संभव है। यह सभ्यता है। पहले, लोग खुली हवा में उतना ही काम करते थे जितना वे चाहते थे। अब कारखानों और खानों के रखरखाव के लिए हजारों श्रमिक एक साथ काम करते हैं। उनकी हालत जानवरों से भी बदतर है। वे करोड़पति लोगों की खातिर, सबसे खतरनाक व्यवसायों में, अपने जीवन के जोखिम पर काम करने के लिए बाध्य हैं। पहले, लोगों को शारीरिक ताकत के बल पर गुलाम बनाया जाता था। अब वे पैसे के प्रलोभन और उन विलासिता की वस्तुओं के गुलाम बन गए हैं, जिन्हें पैसा खरीद सकता है। अब ऐसी बीमारियाँ हैं, जिनके बारे में लोगों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था और डॉक्टरों की पूरी फौज उनके इलाज का पता लगाने में लगी हुई है, और इसलिए अस्पतालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। यह सभ्यता की परीक्षा है। पहले, संदेश भेजने के लिए विशेष दूतों की आवश्यकता होती थी और पत्र भेजने में बहुत खर्च होता था;

आज, कोई भी अपने साथी को एक पैसा खर्च करके पत्र के माध्यम से गाली गलौज कर सकता है। और ये भी सच है, कि इसी कीमत पर, कोई धन्यवाद और शुभकामनाएं भी भेज सकता है। पहले, लोग घर में बनी रोटी और सब्जियों से दो या तीन बार भोजन करते थे; अब, उन्हें हर दो घंटे में कुछ खाने की आवश्यकता होती है क्योंकि अब उन्हें मुश्किल से ही आराम करने का समय मिल पाता है। यह सभ्यता न तो नैतिकता का ध्यान रखती है और न ही धर्म का। यह सभ्यता भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि करना चाहती है, और ऐसा करने में भी यह बुरी तरह से विफल हुई है। यह सभ्यता अधार्मिक है, और इसने यूरोप के लोगों पर ऐसी पकड़ बना ली है कि इसका पालन करने वाले आधे पागल प्रतीत होते हैं। यह सभ्यता ऐसी है कि बस धैर्य रखना है और यह स्वयं ही नष्ट हो जाएगा। मोहम्मद की शिक्षा के अनुसार इसे शैतानी सभ्यता माना जाएगा। हिंदू धर्म इसे काला युग कहता है।"

गाँधी की बहुत प्रशंसा हुई और इसलिए भारतीय सभ्यता को भी उन्होंने बहुत गौरवान्वित किया। लेकिन, भारतीय सभ्यता की प्रशंसा करते हुए, गाँधी इस तथ्य से अनजान नहीं थे कि समसामयिक भारत वैसा नहीं था जैसा उन्होंने वर्णित किया था। वह भारतीय समाज के काले पक्ष जैसे बाल-विवाह, बाल विधवा, किशोर माता, सती प्रथा, विधवा के पुनर्विवाह की अमान्यता, महिलाओं और लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखना, कन्या शिशुहत्या, बहुपत्नी प्रथा, नियोग की प्रथा का अस्तित्व, जहाँ, लड़कियों से धर्म के नाम पर वेश्यावृत्ति करवाई जाती है, धर्म के नाम पर भेड़ और बकरियों को मारना, अस्पृश्यता इत्यादि के नाम पर समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों से अवगत थे। उन्होंने इन बुराईयों को स्पष्ट रूप से बुराई माना। उन्होंने घोषणा की कि प्राचीन सभ्यता के नाम पर कोई भी भारतीय सभ्यता में व्याप्त बुराइयों और कुप्रथाओं का पालन नहीं करें। उन्होंने इन कुप्रथाओं को दूर करने के लिए अतीत में किए गए प्रयासों को मान्यता दी और माना कि भविष्य में भी उन्हें दूर करने के लिए ऐसे प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने स्वीकार किया कि अन्य सभ्यताओं की तरह भारतीय सभ्यता भी हर मायने में परिपूर्ण नहीं थी, लेकिन उनके अनुसार भारतीय सभ्यता में नैतिकता को बढ़ाने की प्रवृत्ति है, जबकि पश्चिमी सभ्यता अनैतिकता का प्रचार करती है। पश्चिमी सभ्यता ईश्वरविहीन है जबकि भारतीय सभ्यता ईश्वर में विश्वास पर आधारित है। गाँधी ने घोषणा की कि 'भारत अद्वितीय है, इसकी ताकत अथाह है।' वह ऐतिहासिक तथ्य की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं कि जब अन्य सभ्यताएं दम तोड़ रही थीं, भारतीय सभ्यता कई झटके खाकर भी टिकी रही। गाँधी ने अपने जीवन में भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक बुराइयों के खिलाफ विशेष रूप से अस्पृश्यता के खिलाफ जीवन भर काम किया और अछूतों को 'ईश्वर की संतान' या 'हरिजन' कहा।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) गाँधी के अनुसार सभ्यता की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

....

2.3 आधुनिक सभ्यता और भारत की स्वतंत्रता का नुकसान

गाँधी ने कहा कि भारतीयों ने अपनी सभ्यता से खुद को दूर कर लिया जो अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक था और इसके बजाय, भौतिक समृद्धि की ओर बढ़ रहा था, जिस पर पश्चिमी सभ्यता आधारित थी और यही भारत की स्वतंत्रता को खोने का आंतरिक और मूलभूत कारण था। वह भारतीय राजाओं के उस ढुलमुल रवैये की निंदा करते हैं जिसने अंग्रेजों को यहां अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ाने का अवसर दिया। वह हिंदुओं और भारत के मुसलमानों के बीच दुश्मनी का भी हवाला देते हैं जिससे भारतीयों ने उन परिस्थितियों का निर्माण किया जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी को ऐसे अवसर प्रदान किए जिसके कारण धीरे धीरे कंपनी का भारत पर नियंत्रण होता गया। और गाँधी का निष्कर्ष है कि, "इसलिए यह कहना ज्यादा सही है कि हमने भारत को अंग्रेजी को दे दिया, न कि भारत हारा।"

गाँधी का दृढ़ मत था कि जब भारतीय अपनी सभ्यता की महानता का एहसास करेंगे और अपनी प्राचीन जड़ों तक जाएंगे तो वे अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंकने में सक्षम होंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि उनका मानना था कि यह भारतीय सभ्यता की कमजोरी का दौर था, जिस दौरान अंग्रेजों ने भारत को अपने नियंत्रण में ले लिया। गाँधी का मानना था कि अंग्रेजों ने आधुनिक रेलवे, टेलीग्राफ, पश्चिमी शिक्षा, वकीलों और डॉक्टरों के पेशे आदि को भारतीयों को लाभ पहुंचाने के लिए नहीं बल्कि उन्हें (अंग्रेजों को) आगे बढ़ाने के लिए पेश किया था।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) आधुनिक सभ्यता के खिलाफ गांधी की दलीलों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

....

....

....

....

....

2.4 औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण की आलोचना

गाँधी का मानना था कि औद्योगीकरण ने पश्चिम में राष्ट्रीयता की हिंसक अवधारणा को जन्म दिया है। उनके अनुसार औद्योगिकीकरण ने समाज को अमीरों और गरीबों में विभाजित कर दिया था और न केवल आर्थिक असमानता पैदा की, बल्कि मजदूर वर्ग की दासता और लालच जैसे अनैतिक भाव को भी जन्म दिया। गाँधी की समालोचना शहरी औद्योगिक दृष्टिकोण पर केंद्रित है। पश्चिमी सभ्यता की उनकी आलोचना इस सभ्यता-मशीनों की जड़ों पर आधारित थी। यह मशीन का वर्चस्व था, जिसने भारत को पीड़ित किया। उनके अनुसार यह ऐसी मशीन थी जिसने भारत को गरीब कर दिया है। इसीलिए 'खादी' की अवधारणा या लकड़ी के चरखे पर सूती धागे की कताई को गाँधी ने न केवल पश्चिमी औद्योगिकीकरण के खिलाफ एक हथियार के रूप में अपनाया, बल्कि 'स्वराज' और 'स्वदेशी 'की अवधारणा को बढ़ावा देने के लिए भी अपनाया। उन्होंने मुखर रूप से इस बात पर बल दिया कि जब भारतीय लोग अपने देश में बुने कपड़े पहनेंगे और अपने ही देश में

निर्मित सामानों का उपयोग करेंगे तो हमारी खोई हुई सभ्यता पर सभी को गर्व होगा। अतीत में, कबीर जैसे संतों ने अपने देहाती गीतों के माध्यम से इस विचार का प्रचार किया था।

गाँधी ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि उनका स्वदेशी मुख्य रूप से हाथ से बुने खद्दर पर केंद्रित था और वह सब कुछ जिसका निर्माण भारत में किया जा सकता था। इस अर्थ में, खादी उस गौरवशाली सभ्यता की ओर वापस जाने का माध्यम था जो भारत में यूरोपीय लोगों के आने से पहले विद्यमान था। 1920 के दशक के मध्य में सक्रिय राजनीति से हटने के दौरान, गाँधी ने खुद को खादी के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया, इसे जमीनी स्तर से राष्ट्र-निर्माण की रणनीति के रूप में बदल दिया। उन्होंने संगठन के लिए खादी का सुझाव दिया और यहां तक कि 'सूत की मुद्रा' की भी परिकल्पना की। गाँधी का चरखे से भावनात्मक लगाव से ब्रिटिश और पश्चिमी शिक्षित शहरी भारतीय दोनों ही परेशान थे। यह स्पष्ट था कि वे भारतीय गाँवों की अविश्वसनीय गरीबी को समझने में असमर्थ थे।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) गांधी के औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण की आलोचना पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

2.5 आधुनिकता के आलोचक के रूप में शिक्षा

भारत में आधुनिकता की शुरुआत के लिए बुनियादी शिक्षा यकीनन सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था। यह औपनिवेशिक हुक्मरानों द्वारा डिजाइन किया गया था, इसके अलावा आमतौर पर भारतीय परंपरा से अलग होने के साथ, यह ग्रामीण इलाकों में लाखों लोगों की जरूरतों और समस्याओं से बेखबर था। गाँधी की बुनियादी शिक्षा योजना मुख्य रूप से ग्रामीण शिक्षा और हस्तशिल्प का एक तंत्र था जो शिक्षा का माध्यम था। कताई और बुनाई गाँधी की प्राथमिकता थी और इसलिए उनका पूरा शिक्षाशास्त्र और शैक्षिक दर्शन उनके जीवन के लिए खादी-आधारित दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ था।

गाँधी शिक्षा की पश्चिमी व्यवस्था के घोर आलोचक थे। उन्होंने महसूस किया कि यह भारत की जरूरतों के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त और पश्चिमी मॉडल की एक बुरी नकल थी। उन्होंने आगे कहा कि तत्कालीन शिक्षा प्रणाली का माध्यम विदेशी भाषा होने के कारण हमारे स्कूलों और कॉलेजों के युवाओं की ऊर्जा का पूरा उपयोग नहीं हो पाता था और वे बस क्लर्क और कार्यालय के कामगार की फौज बनते जा रहे थे। उनका दृढ़ मत था कि इसने सारी मौलिकता का नाश कर दिया है, विभिन्न भारतीय भाषाओं को कमजोर कर दिया है और जनता को उच्च ज्ञान के लाभ से वंचित कर दिया है जो अन्यथा उनके साथ शिक्षा वर्गों के मिलन के माध्यम से सही रहता। इस शिक्षा प्रणाली ने शिक्षित भारत और आम जनता के बीच एक खाई पैदा की; इसने मस्तिष्क को तेज किया लेकिन धर्म पर

आधारित शिक्षा और हस्तशिल्प प्रशिक्षण को दूर कर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि इस प्रणाली ने कृषि प्रशिक्षण की सबसे बड़ी जरूरत को उपेक्षित कर दिया।

गाँधी ने शिक्षित भारतीयों के लिए काफी कठोर रूप में आवाज उठाई होती क्योंकि उन्होंने उनके शैक्षिक प्रशिक्षण और उनके मूल्यों को भुनाया था और उन्हें बताया था कि वे प्रचलन में शिक्षा प्रणाली के पीड़ित होने के कारण अपनी मातृभूमि के प्रति गद्दार थे। यह एक रोचक तथ्य है कि ब्रिटिश शासन के विरोध के बावजूद, अधिकांश राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश शासन को अस्वीकार नहीं किया। उसी दौरान अधिकांश अन्य राष्ट्रवादियों ने शिक्षा की ब्रिटिश प्रणाली को सिरे से खारिज नहीं किया, क्योंकि वे इसे एक ऐसे साधन के रूप में देखते थे जिसके द्वारा भारत भौतिक रूप से उन्नत राष्ट्र बन सकता था। हालाँकि, गाँधी की अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत से ही अलग सोच थी। वह शिक्षा को स्वावलंबी बनाना चाहते थे, बच्चों के शरीर के साथ-साथ उनके दिमाग को भी प्रशिक्षित करना चाहते थे और विदेशी धागों और कपड़ों का पूर्ण बहिष्कार चाहते थे। इस प्रकार, बच्चे आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हो जाएंगे।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) गांधी की आधुनिक शिक्षा की आलोचना पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

2.6 सारांश

यह निष्कर्ष निकालना सही नहीं है कि गाँधी आधुनिक सभ्यता की सभी धाराओं के खिलाफ थे और वे वापस भारतीय अतीत में लौटना चाहते थे। अक्सर उन्होंने आधुनिक सभ्यता की बुराइयों के कारण अपनी विचारधारा में उसकी आलोचना की। जहां तक सामाजिक संगठन की बात है, गाँधी धार्मिक और समाज सुधारक थे। वे वंशानुगत पुरोहिती, तथाकथित नीची जातियों के खिलाफ अस्पृश्यता और मंदिरों में उनके प्रवेश से वंचित करने जैसी कुरीतियों के खिलाफ लड़े। उन्होंने इन सामाजिक सुधारों के लिए सामाजिक समानता और वैज्ञानिक भावना पर आधारित कई अभियान चलाए। गाँधी के समय में और बाद में भारत में हुए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों और नए सामाजिक वर्गों के उद्‌भव ने उन आधुनिक विचारों को लोकप्रिय बनाने में मदद की, जिन्हें गाँधी ने अपने समय में फैलाने की कोशिश की थी। हिंसा की उपेक्षा और सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन के संचालन की संभावनाओं के संबंध में, गाँधी अपने समय से काफी आगे थे और उन्हें ''परमाणु युग का पैगंबर'' कहा जाता था।

गाँधी की आधुनिकता और सभ्यता की अवधारणा निम्नलिखित अवधारणाओं के इर्द गिर्द घूमती हैः -

a) स्वराज - स्वराज का अर्थ स्व-शासन या आत्म-शासन है। उन्होंने शब्दों में एक आदर्श सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के अपने विचार का वर्णन किया: "स्वतंत्रता की शुरुआत नीचे से होनी चाहिए, इस प्रकार हर गांव एक गणतंत्र या पूरी शक्ति वाला पंचायत के साथ होगा।" यह विचार राजनीतिक विकेंद्रीकरण पर आधारित था।

b) स्वदेशी - गांधी के अनुसार स्वदेशी का मतलब केवल अपने देश में निर्मित स्थानीय सामानों का उपयोग करना है। गांधी ने 'स्वदेशी' शब्द को एक आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक आयाम दिया और इसे ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।

c) अहिंसा - गांधी के अनुसार अहिंसा आवश्यक थी और इसलिए उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की इस आधार पर आलोचना की कि इसने हिंसा को बढ़ावा दिया।

d) खादी - गांधी के अनुसार खादी, ब्रिटिश मिलों द्वारा बुनकरों को व्यवसाय से बाहर करने और खेतों में काम पर जाने से पहले भारत के महान अतीत की याद दिलाती है। इस प्रकार खादी ने स्वतंत्रता और पहचान का एक उपयुक्त उदाहरण दिया।

गांधी भौतिकतावाद, मशीन और उत्पादन के केंद्रीकरण के आलोचक थे, और इसके विपरीत, समाज में सभी के लिए श्रम का जीवन, संक्षेप में 'ब्रेड-लेबर' की उनकी अवधारणा में निहित था। वह गांवों की आर्थिक आत्मनिर्भरता के आदर्श में विश्वास करते थे। गांधी ने भारत के लिए जो आधुनिकता का सपना देखा वह आध्यात्मिक महत्व और मजबूत नैतिक मूल्यों के साथ थी। उनका मानना था कि सभी भारतीयों को दिल बड़ा करके इंसान को गुणों और दोषों के साथ स्वीकार करना चाहिए और सम्मान देना चाहिए। उनके अनुसार आधुनिकता कभी भी मात्र वस्तुओं का संचय नहीं थी, बल्कि वो मूल्य थे जो एक व्यक्ति को परमेश्वर (भगवान) के करीब ले जाए जो सबसे बड़ा सत्य है।

ऐसे मौके आए जब गाँधी ने आधुनिक पश्चिमी सभ्यता पर टिप्पणी करते हुए उसे 'एक अच्छा विचार' बताया। वे पूरी तरह से आधुनिक सभ्यता के खिलाफ नहीं थे, लेकिन पश्चिम में हो रही भौतिक प्रगति और आधुनिकता की अवधारणा में उन्हें संदेह था। उन्हें यह मालूम था कि आधुनिक सभ्यता में भी कुछ अच्छे तत्व थे, जैसे कि लोकतांत्रिक राजनीतिक दर्शन, जो भारत के लिए उपयोगी हो सकता था। हिंद स्वराज के अंग्रेजी संस्करण की प्रस्तावना में, उन्होंने अपने देशवासियों से भी आग्रह किया कि वे आधुनिक सभ्यता के ऐसे सकारात्मक पहलुओं को अपनाएं, जिससे अंग्रेजों को बाहर किया जा सके।

2.8 संदर्भ ग्रंथ

ऐम्बलर, रेक्स, 'गाँधी अंगेस्ट मॉडर्निटी', *द गाँधी फाउण्डेशन,* जनवरी 5, 1997 https://gandhifoundation.org/1997/01/05/gandhi-against-modernity-%E2%80%93-by-rex-ambler/.

ऐण्ड्रयू, सी.एफ., *महात्मा गाँधीज आइडियाज,* ऐलन एण्ड अनविन, लंदन, 1929

बक्शी, रजनी, 'सिविलाइजेशन गाँधी', *गेटवे हाउस,* अक्टूबर, 2012 http://www.mkgandhi.org/articles/Civilizational_Gandhi.pdf.

गाँधी, एम.के., *हिन्दू धर्म,* नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1950

गाँधी, एम.के., *हिन्द स्वराज ऑर इण्डियन होम रूल,* नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1938

गाँधी, एम.के., *इण्डिया ऑफ माय ड्रीम*, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 47

गाँधी, एम.के., 'खादी एण्ड स्पिन्निंग', *विलेज स्वराज*, एन.डी. http://www.gandhiashramsevagram.org/village-swaraj/khadi-and-spinning.php.

'हॉउ कैन इण्डिया बिकम फ्री', *फ्रेण्ड्स ऑफ* तिब्बत, एन.डी. http://www.friendsoftibet.org/main/hind_swaraj_14.html.

ज्वॉएस, एप्पलबाय, ऐट आल, *टेलिंग द ट्रुथ अबाउट हिस्ट्री*, डब्ल्यू.डब्ल्यू नॉर्टन एण्ड कम्पनी, न्यू यॉर्क, लंदन, 1994

कामथ, एम.वी., *गाँधी : ए स्प्रिचुअल जर्नी*, इण्डिस सोर्स बुक्स, मुम्बई, 2007

पिल्लई, मोहनन ब., *गाँधीज लिगेसी एण्ड न्यू ह्यूमन सिविलाइजेशन*, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, न्यू डेहली, 1999

प्रधान, राम चन्द्र, 'गाँधी : ए प्रोपोनेन्ट ऑफ प्रि-मॉडर्निटी, मॉडर्निटी ऑर पोस्ट-मॉडर्निटी', *रिफ्लेक्शन ऑन हिन्द स्वराज*, एन.डी., http://www.gvpwardha.iecit.in/documents/books/swaraj/12.pdf.

वैट्टिक्काल, थॉमस, गाँधीयन सर्वोदय : रियलाइजिंग ए रियलिस्टिक यूटोपिया, नेशनल गाँधी म्यूजियम एण्ड ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, न्यू डेलही, 2002

'व्हाय वाज इण्डिया लॉस्ट?', *महात्मा गाँधीज राइटिंग्स एण्ड फिलोसफी*, एन.डी. http://www.mkgandhi.org/hindswaraj/chap07_indialost.htm.

2.9 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) पश्चिमी दर्शन (टॉल्स्टॉय, थोरो, रस्किन) और भारतीय दर्शन (हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन दर्शन) दोनों दर्शनों के गाँधी पर विभिन्न प्रभाव की चर्चा की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) पश्चिमी / आधुनिकतावादी विकास विशेषाधिकारों की शारीरिक (भौतिक) आवश्यकताओं की पूर्ति। इस बिंदु की व्याख्या करें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) गहराती असमानता, अलगाव और पर्यावरण का क्षय होना

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

1) नैतिक निहितार्थ और व्यक्तित्व निर्माण पर जोर होना चाहिए।

इकाई 3 गाँधीः विकास समीक्षक

संरचना

3.1 प्रस्तावना
लक्ष्य एवं उद्देश्य
3.2 असमान विकास
3.3 हिंसा और विकास
3.4 पर्यावरण के लिए नुकसानदेह विकास
3.5 विकास की नई अवधारणाएं
3.6 गाँधी का विकास के प्रति दृष्टिकोण एवं आलोचना
3.7 सारांश
3.8 संदर्भ ग्रंथ
3.9 अपनी प्रगति की जांच करे अभ्यास के उत्तर

3.1 प्रस्तावना

विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो भौतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक और जनसांख्यिकीय घटकों के अलावा उन्नति, प्रगति और सकारात्मक परिवर्तन करती है। विकास का उद्देश्य पर्यावरण के संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बिना, जनसंख्या के जीवन स्तर और स्थानीय क्षेत्रीय आय और रोजगार के अवसरों का निर्माण या विस्तार में वृद्धि है। विकास दिखता है और उपयोगी है, जरूरी नहीं कि इसका प्रभाव तुरंत दिखे, पर बदलाव को जारी रखने के लिए गुणवत्ता में बदलाव और स्थितियों के निर्माण का एक पहलू शामिल होता है। आर्थिक प्रगति, औद्योगीकरण, ऊर्जा की खपत और शहरीकरण के संदर्भ में विकास को मापने के मौजूदा तरीके अपर्याप्त हो गए हैं और विभिन्न मुद्दों को संबोधित करने में विफल रहे हैं जो इस दुनिया के लोगों के लिए दुख का स्रोत है।

वर्तमान विकास की सोच पर गाँधी का जबरदस्त प्रभाव रहा है। अधिकांश प्रभावित लोग आधुनिकतावाद विरोधी या उत्तर-आधुनिकतावादी विचार वाले हैं। गाँधी के विचारों का प्रभाव नीति, सक्रियता और विकास सभी क्षेत्रों में मौजूद है। जब से, विशेष रूप से पश्चिम में, गाँधी और गाँधीवाद के विश्लेषण की लोकप्रियता में व्यापक वृद्धि हुई है, यह शायद ही हमें अपने प्रतिस्पर्धी संदर्भ में एक हित-आधारित राजनीतिक आंदोलन के गाँधीवादी नेतृत्व की वास्तविक प्रकृति को समझने में मदद करता है।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

यह इकाई आपको समझने में सक्षम करेगा

- विकास के मौजूदा तरीकों के कारण असमानताएं।
- हिंसा की ओर अग्रसर विकास।
- विकास का पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव।
- विकास की नई अवधारणाएं (सतत विकास)।

डॉ पार्थसारथी मंडल, एसोसिएट प्रोफेसर, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज, मुंबई–88 और सुरुचि अग्रवाल, रिसर्च स्कॉलर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली–25

- विकास से जुड़ी समस्याओं के समाधान के रूप में गाँधी का दृष्टिकोण और विकास की समालोचना।

3.2 असमान विकास

विकास के मुख्यधारा मॉडल ने लगातार असमानता को जन्म दिया है। इसने न केवल ऊध्र्वाधर असमानताओं का निर्माण किया है, बल्कि अधिकांश समाजों में विकास से लाभान्वित कुछ गुटों के साथ क्षैतिज असमानताएं भी हैं। इस प्रकार, आर्थिक विकास के फल का आनंद संभ्रांत वर्ग के एक छोटे से वर्ग द्वारा लिया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप असमान विकास हो रहा है। यह एक सार्वभौमिक समस्या थी और है, और भारतीय समाज भी इसका अपवाद नहीं था। विकास की प्रक्रिया ने उत्तर-दक्षिण के विभाजन को भी व्यापक किया है, जिसमें उत्तर के विकसित देशों को विकास के लाभों का प्रमुख हिस्सा मिलता है। दक्षिण के देशों को खुद के भरोसे छोड़ दिया जाता है जिसने उनकी आर्थिक प्रगति को धीमा कर दिया है। असमानता की समस्या अंतर सामाजिक और परा सामाजिक दोनों है और सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग द्वारा इसे प्रमुखता से नजरअंदाज किया जाता है। पूरी दुनिया में बढ़ती असमानता की समस्या से निपटने के लिए कई उपाय किए जा रहे हैं।

यदि हम भारत का उदाहरण लें, तो भारत ने स्वतंत्रता के बाद कई उपायों की शुरुआत की जिसमें एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम, आदिवासी कल्याण योजनाएं, समाज के आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के लिए आरक्षण, रोजगार गारंटी योजनाएं और नकद हस्तांतरण योजना शामिल हैं। इन सभी उपायों से समावेशी विकास में योगदान करना था, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक और सामाजिक दोनों ही तरीकों से व्यापक असमानता का उन्मूलन हुआ। यही नहीं, भारत ने 1991 में वैश्वीकरण और उदारीकरण की विशेषता वाले आर्थिक नीतियों के एक नए युग में प्रवेश किया। इसका उद्देश्य विकास की प्रक्रिया को तेज करना था जो कम से कम असमानता की समस्या को कम कर सकती थी, अगर इसे समाप्त नहीं किया जा सकता। अब यह स्पष्ट है कि ये सभी उपाय बड़े पैमाने पर गरीबी और असमानता की समस्या से निपटने में विफल रहे हैं। गरीबी रेखा से ऊपर लोगों के बड़े हिस्से को लाने के सरकार के दावे के विपरीत, सामूहिक गरीबी और असमानता की समस्या हमेशा की तरह बेकाबू बनी हुई है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) विकास क्या है? विकास के मौजूदा तरीकों से असमानता को बढ़ावा कैसे मिलता है?

....

....

....

....

....

....

....

....

3.3 हिंसा और विकास

कई विश्लेषकों का मानना है कि विकास और हिंसा के बीच घनिष्ठ संबंध है। हिंसा की समस्या ने विशेष रूप से एक स्थाई रूप ले लिया है, क्योंकि विकास आदिवासियों, स्वदेशी समुदायों, मछुआरों, प्रवासी श्रमिकों सहित अन्य वर्गों के लोगों के विस्थापन का कारण बना और ये विकास के सबसे बुरे शिकार बने। वे धीरे-धीरे अपनी आजीविका के पारंपरिक स्रोतों से वंचित होते गए। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में, लाखों लोग अपने पुनर्वास के लिए किसी भी उचित योजना के बिना अपनी भूमि को जबरन लूटे जाते देख रहे थे। इस तरह का जबरन विस्थापन न केवल शारीरिक पीड़ा, बल्कि मनोवैज्ञानिक भटकाव भी पैदा करते हैं।

इन लोगों को ऐसी प्रक्रियाओं के कारण हताशा के साथ जीने को मजबूर किया जाता है। कई बार इनमें से कुछ समूह अत्यधिक पीड़ा और लाचारी के कारण हिंसा का सहारा लेते हैं। इस प्रकार, हिंसा का एक शातिर और कभी न खत्म होने वाला चक्र बनता जाता है, जिससे निपटना मुश्किल हो रहा है। शहरीकरण में तेजी से खनन के लिए भूमि का अपरिहार्य और जबरन अधिग्रहण, बड़े बांधों का निर्माण, हाइड्रो-इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट, विशाल रियल एस्टेट कारोबार आदि, अधिकांश समाजों में लोगों के विस्थापन का प्राथमिक कारण बन गए हैं। इससे विस्थापित और वंचित लोगों में एक स्पष्ट संदेश जाता है कि विकास का वर्तमान मॉडल केवल अभिजात वर्ग के हितों को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, भारत में देश के विभिन्न हिस्सों में नक्सलियों या माओवादियों के बढ़ते हिंसक आंदोलन देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरा बन रहे हैं। लोगों के इन आक्रोशों का उन समूहों द्वारा लाभ उठाया जा रहा है जो वैचारिक रूप से हिंसा और वर्ग युद्ध के साथ हैं। भले ही सरकार समस्या के विभिन्न आयामों से अवगत हो, लेकिन वर्तमान नीतियों के साथ विकास की जारी गतिशीलता कोई दूसरा विकल्प नहीं छोड़ती। इस प्रकार विकास और हिंसा साथ साथ चलते हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) विकास से हिंसा कैसे फैलती है?

....

....

....

....

3.4 पर्यावरण के लिए नुकसानदेह विकास

असमान विकास और बढ़ती हिंसा के अलावा, वर्तमान विकास का पैटर्न पारिस्थितिक/पर्यावरण असंतुलन भी पैदा करता है, जिससे मानव समाज के अस्तित्व के लिए एक गंभीर खतरा पैदा हो रहा है। जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत में कमी, ग्लोबल वार्मिंग, ध्रुवीय बर्फ का पिघलना और समुद्र के स्तर और बढ़ता प्रदूषण औद्योगिक विकास के परिणाम हैं। पूरी दुनिया में सरकारें ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से अवगत हैं। हालांकि, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए उनके द्वारा उठाए गए विभिन्न कदम वांछित परिणाम देने में विफल रहे हैं।

वास्तव में, पर्यावरण की वर्तमान स्थिति काफी परेशान करने वाली है। यह पृथ्वी के औसत तापमान में निरंतर वृद्धि से स्पष्ट होता है। सभी जीवित प्राणियों को ग्लोबल वार्मिंग और ओजोन परत की कमी के बुरे प्रभावों का सामना करना पड़ रहा है। यह स्पष्ट है कि विकास के वर्तमान पैटर्न में ऊर्जा की उच्च खपत की आवश्यकता होती है, जिसके बिना यह संभव नहीं है। इससे कोयला, पेट्रोल, पानी आदि जैसे प्रमुख ऊर्जा स्रोतों में तेजी से कमी आई है और कई देशों को परमाणु ऊर्जा के लिए प्रोत्साहित किया गया है, जिनके अपने अलग नुकसान हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि ऊर्जा की निरंतर उपलब्धता एक मुद्दा बन गया है जो दीर्घकालिक विकास की किसी भी संभावना में बहुत बड़ी बाधा है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) विकास का पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव कैसे पड़ता है?

....

....

....

....

....

3.5 विकास की नई अवधारणाएं

मुख्यधारा के विकास की उपरोक्त समस्याओं के कारण पर्यावरण और विकास से संबंधित समस्याओं को दूर करने और उचित समाधान खोजने के लिए नई अवधारणाएं और विचार उभरने लगे। विकास को समग्र परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा है। 1972 की शुरुआत में, भूटान के चौथे राजा, जिग्मे सिंग्ये वांगचुक ने प्रस्ताव दिया कि हमें सामान्य सकल घरेलू उत्पाद पर निर्भर रहने के बजाय विकास के सर्वश्रेष्ठ सूचकांक के रूप में 'सकल राष्ट्रीय खुशी' पर विचार करना चाहिए। उन्होंने प्रगति के तरीकों के लिए एक समग्र दृष्टिकोण और लोगों की भलाई के गैर-आर्थिक पहलुओं को समान महत्व देने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह नया दृष्टिकोण बाद में विकास के व्यवहार्य मॉडल के लिए लोकप्रिय बन गया। इसके बाद, उत्तर और दक्षिण के देशों के बीच बढ़ती असमानता और विभाजन के संदर्भ में, सतत विकास और समावेशी विकास का विचार विशेष रूप से पश्चिम में एक लोकप्रिय अवधारणा बन गया। सतत विकास की ब्रन्डलैंड आयोग की परिभाषा में दो प्रमुख अवधारणाएं शामिल हैं। i) 'जरूरतों' की अवधारणा, विशेष रूप से, दुनिया के गरीबों की आवश्यक आवश्यकताएं, जिन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए और ii) वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने की पर्यावरण की क्षमता पर प्रौद्योगिकी और सामाजिक संगठन द्वारा लागू सीमाओं का विचार की जरूरत है। आयोग के अनुसार विकास का प्रमुख उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की संतुष्टि है। इस प्रकार इसने जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर आर्थिक विकास के पहले के विचार को उलट दिया। इस विचार को मानव विकास की नई धारणाओं पर बल देते हुए और भी सही किया गया।

उपरोक्त चर्चा से, कोई भी आसानी से यह कह सकता है कि दुनिया के कुछ बुद्धिजीवी आंशिक रूप से गाँधी द्वारा रचित हिंद स्वराज या भारतीय होम रूल और अन्य बाद के लेखन में दिए गए कुछ विचारों के महत्व को महसूस करते हैं। हालांकि, यह कहने की

जरूरत नहीं कि विकास के कुछ नए विचार जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, पश्चिमी पूंजीवादी मॉडल को बनाए रखने के प्रयास से अधिक नहीं है जिसने आज मानव जाति को पीड़ित करने वाली अधिकांश समस्याएं पैदा की हैं। इसके अलावा, ये सभी प्रयास उत्तर-दक्षिण विभाजन की स्पष्ट वास्तविकताओं को छिपाने के लिए एक चाल के रूप में भी दिखाई देते हैं जिसे केवल विकास के एक अधिक कट्टरपंथी दृष्टिकोण से पाटा जा सकता है जिसे गाँधी ने अपने जीवन काल में प्रस्तावित किया था।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) विकास की नई अवधारणाओं की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

3.6 गाँधी का दृष्टिकोण और विकास की आलोचना

गाँधी ने विकास के एक ठोस मॉडल पर काम नहीं किया, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका पेश किया जो विकास के एक व्यापक दर्शन में प्रकट हो सकता है। उनके संबंधपरक विश्व दृष्टिकोण ने ब्रह्मांड में अन्योन्याश्रितता और तत्वों के परस्पर संबंध के महत्व को रेखांकित किया। उनका जीवन का पूरा दर्शन अद्वितीय था और इस समझ पर आधारित था कि कोई भी इंसान, खुद को और अपने आप को पृथ्वी और उसके संसाधनों के एकमात्र संरक्षक के रूप में नहीं देख सकता है। गाँधी ने जीवन को आत्म-साक्षात्कार के अवसर के रूप में देखा। चूँकि मनुष्य सामाजिक है और उसे अपना जीवन समाज में व्यतीत करना है न कि एकांत में, इसलिए मनुष्य को असंख्य समस्याओं से जूझना पड़ता है जिसमें चुनौतियाँ और अवसर शामिल हैं। उनके अनुसार मनुष्य में सबसे महत्वपूर्ण तत्व आत्मा है। उन्होंने मानव शरीर को एक साधन के रूप में देखा। उनका मानना था कि शरीर को प्रधानता देने से आत्मा की दृढ़ता और वृद्धि बाधित होती है। चाहत, संसाधनों तक पहुंच, संसाधनों का उपयोग और अन्य प्राणियों और प्रकृति के साथ बातचीत की धारणा को इसलिए देखा गया और इसे जीवन के अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ाया गया। हमें अपने जीवन और प्रकृति के बीच के संबंध, ऊर्जा, भोजन आदि के संदर्भ में हम क्या खाते हैं और प्रकृति से हमें क्या प्राप्त होता है, पर निरंतर आत्मनिरीक्षण करना होगा। हमें यह पता लगाना होगा कि हम अपने उद्देश्य और समाज के प्रति जिम्मेदारी के संबंध में इसका उचित उपयोग कर रहे हैं या नहीं। हमें पर्यावरण पर बहुत अधिक मांग किए बिना अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने समय का प्रभावी ढंग से उपयोग करना होगा। गाँधी ने लोगों के सामने एक जीवनशैली या जीवन जीने की कला सामने रखा और इन सिद्धांतों के अनुरूप जीवन जीने की अपनी व्यवहारिकता का प्रदर्शन भी किया। गाँधी के दर्शन के अनुप्रयोग से मानव को सह जीवितों की रुचियों को नुकसान पहुंचाए बिना उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की सुविधा मिलेगी। अपने सबसे अच्छे रूप में, यह बेहतर जीवन जीने में मदद करता है।

गाँधी के जीवन दर्शन में एक वैकल्पिक विकास पद्धति का आह्वान किया गया है जिसमें प्रकृति और पर्यावरण का सामंजस्य है। गाँधी के विकास का मॉडल समग्र जीवन से संबंधित है जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक को अलग नहीं किया जा सकता है, लेकिन आसान विश्लेषण के लिए इस विकास के मॉडल के विभिन्न घटकों को देखना होगा।

गाँधी अपने आर्थिक विचारों में मुख्यधारा के कई अर्थशास्त्रियों से अलग हैं। अधिकांश अर्थशास्त्री मुख्य रूप से मानव जीवन के भौतिक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करते हैं। गाँधी ने 'आर्थिक प्रगति' और 'नैतिक प्रगति' के बीच स्पष्ट अंतर किया और माना कि, जब लोग आर्थिक प्रगति का संदर्भ देते हैं, तो उनका अर्थ है बिना सीमा के भौतिक उन्नति और वास्तविक प्रगति से उनका अर्थ है नैतिक प्रगति। उन्होंने जोर देकर कहा कि हालांकि वह आधुनिक आर्थिक सोच से अच्छी तरह से वाकिफ नहीं थे, जैसे कि अर्थशास्त्री एडम स्मिथ और अन्य, लेकिन एक ऐसे बिंदु पर पहुंच सकते हैं जहां एक छोटी सी आवाज किसी के बाहरी सबूत की आवश्यकता के बिना किसी के विचार और कार्य के लिए मार्गदर्शक बन सकती है। दूसरे शब्दों में, गाँधी के लिए, एक शुद्ध आत्मा की आंतरिक आवाज ईश्वर की आवाज के समान है और किसी की आंतरिक आवाज को केवल तभी सुना जा सकता है जब कोई पूरी रचना के साथ अपने आप को पहचान सके और अपरिग्रह का जीवन अपना सके। उन्होंने आधुनिक आर्थिक सोच में बुनियादी दोष पाया कि इसने लोगों को विशेष रूप से कुलीन वर्ग को ईश्वर के बजाय धन की पूजा करने के लिए प्रेरित किया जो नैतिक प्रगति में मुख्य बाधा बन गई। उन्होंने आगे कहा कि एक सुव्यवस्थित समाज का वास्तविक माप ''करोड़पतियों की संख्या नहीं है बल्कि जनता के बीच भुखमरी का अभाव है।'' गाँधी ने अपने विचारों के समर्थन में मार्क के गॉस्पेल को संदर्भित किया जहां यह कहा गया था, ''बच्चे , यह उनके लिए कितना कठिन है कि भगवान के राज्य में प्रवेश करने के लिए धन पर भरोसा करें। एक ऊँट के लिए सुई से गुजरना आसान है, लेकिन एक अमीर आदमी के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।" इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गाँधीवादी आर्थिक विचार मुख्यधारा की आर्थिक सोच से काफी अलग थी।

संपूर्ण गाँधीवादी आर्थिक सोच एक अहिंसक अर्थव्यवस्था का विकास और इसका दीर्घकालिक निर्वाह है। इसे हासिल करने के लिए गाँधी ने लोगों की विलासिता संबंधी इच्छाओं का त्याग करके बुनियादी जरूरतों को पूरा करने, लोगों के द्वारा उत्पादन न कि बड़े पैमाने पर उत्पादन करने, आजीविका श्रम, यज्ञ, ट्रस्टीशिप, स्वदेशी, और मानवता को ध्यान में रखकर मशीनरी का उपयोग करने जैसी अच्छी विचारों को विकसित किया। यह स्पष्ट है कि गाँधी विकास की एक पूरी तरह से नई दृष्टि प्रस्तुत करते हैं, जो विकास के पश्चिमी मॉडल को प्रतिस्थापित कर सकता है, जो शहरीकरण और औद्योगीकरण के साथ मानव के विस्तार पर इसके अतिप्रकारों द्वारा चिह्नित है, क्योंकि इसके मूल में शत प्रतिशत अहं विद्यमान है और सभी आध्यात्मिक और सामुदायिक भावना की अनदेखी होती है। ऐसे व्यक्ति मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य के रूप में केवल शारीरिक सुख से संचालित होते हैं। ये सभी अत्यधिक उपभोक्तावाद के लिए पागल भीड़ का नेतृत्व करते हैं जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी के सीमित संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है।

आज जैसा कि हम जानते हैं कि मानव जाति को उसकी असीमित इच्छाएं और सीमित संसाधनों के बीच संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। गाँधी ने एक व्यवहार्य, ठोस विकास मॉडल प्रस्तुत करके पूरी प्रक्रिया को उलट दिया। उन्होंने मानवीय जरूरतों और लालच के बीच स्पष्ट अंतर करके सीमित प्राकृतिक संसाधनों और मानव की आवश्यकताओं के बीच एक सही संतुलन लाने की कोशिश की। उन्होंने गरीबी को कभी भी महिमामंडित नहीं किया

जिसके परिणामस्वरूप सभी प्रकार के मानवीय दुख और मानवीय पतन होते हैं। वास्तव में, वह स्व-उत्पादक और आत्मनिर्भर आर्थिक व्यवस्था सुनिश्चित करके गरीबी को समाप्त करना चाहते थे। गाँधी ने 'ओसिएनिक सर्कल' की अपनी नवीन अवधारणा पर जोर देते हुए, गाँव स्तर से वैश्विक स्तर पर सामुदायिक चिंताओं के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता लाने की कोशिश की।

गाँधी की असली ताकत इस तथ्य में थी कि उन्होंने न केवल अमूर्त विचारों को सूत्रबद्ध किया, बल्कि उन्होंने बड़े पैमाने पर उत्पादन के विचार को बदलकर लोगों द्वारा उत्पादन का एक व्यावहारिक और तार्किक मॉडल प्रस्तुत किया। श्रम पर आधारित ऐसी विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था, जिसे मशीनरी के साथ प्रतिस्थापित करने के बजाय, वर्तमान प्रणाली से पीड़ित कुछ समस्याओं से निपट सकती है, जैसे बेरोजगारी, स्वचालन, अलगाव और बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण। स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया जाता है, जिससे ऐसी विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था की आधारशिला बनेगी जिसमें गाँव एक मूल इकाई बनेगी। वर्तमान व्यवस्था के तहत काम में नैतिकता की अनुपस्थिति बुनियादी चुनौतियों में से एक है क्योंकि इसे मजबूरी के रूप में लिया जाता है। इसके अलावा, दुनिया भर में लोग शारीरिक श्रम न करके मानसिक श्रम करना पसंद करते हैं, इस तरह कुलीन और आम जनता के बीच बेलगाम खाई बनती जाती है। भगवद् गीता की ईश्वर द्वारा निरंतर कार्य की अवधारणा से प्रेरित होकर और 'पर्वत पर उपदेश' में साथी प्राणियों की सेवा करने के लिए, गाँधी ने एक उच्च दार्शनिक और आध्यात्मिक स्तर पर काम की नैतिकता को अपनाया। ऐसे परिदृश्य में मानसिक और अकुशल कार्य के बीच का अंतर अपने आप मिट जाता है। मैला ढोने का काम शुरू करके गाँधी भारत जैसे समाज में श्रम की गरिमा स्थापित करना चाहते थे जिसे ऐतिहासिक रूप से विरासत में मिला कार्य बताया गया था। इतना ही नहीं, एक कदम आगे बढ़ते हुए, उन्होंने शारीरिक श्रम को अपनी रोटी कमाने के लिए एक शर्त के रूप में रखा, और यही रोटी श्रम की उनकी अवधारणा का वास्तविक अर्थ है। भगवद् गीता से प्रभावित होकर उन्होंने यज्ञ की अवधारणा की नई और अभिनव व्याख्या की। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए सामाजिक भलाई में योगदान देना अनिवार्य होना चाहिए और उसे केवल उतना ही हिस्सा लेना चाहिए जिसकी उसे वास्तव में आवश्यकता है। उन्होंने यहां तक कहा कि जो कोई भी अपने हिस्से के सामाजिक भलाई में योगदान नहीं देता है और फिर भी अपने हिस्से से अधिक लेता है वह किसी चोर से कम नहीं है। यज्ञ की उनकी अवधारणा समाज के प्रत्येक सदस्य को न्यायसंगत हिस्सा देने के दौरान प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों के निरंतर नवीनीकरण के लिए एक अनूठा प्रयास है। विकास के ऐसे दृष्टिकोण में व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं को एक दूसरे के लिए तैयार किया जाता है।

निजी संपत्ति की संस्था का प्रबंधन और स्वामित्व पैटर्न आधुनिक समय में सबसे अधिक परस्पर विरोधी मुद्दों में से एक रहा है। उदारवादियों और मार्क्सवादियों के बीच इस मुद्दे पर बहस का एक लंबा इतिहास रहा है। जबकि उदारवादियों ने निजी प्रबंधन और स्वामित्व पर जोर दिया, मार्क्सवादी सामाजिक स्वामित्व की आड़ में राज्य के स्वामित्व की वकालत करते हैं। गाँधी इन दोनों अवधारणाओं की खामियों से अवगत थे। उनके अनुसार पूंजीवाद स्वार्थ, असमानता और अत्यधिक मुनाफाखोरी को जन्म देता है; मार्क्सवाद सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के अपने सबसे अस्पष्ट सिद्धांत के तहत अधिनायकवाद की ओर जाता है। ट्रस्टीशिप के अपने सिद्धांत के माध्यम से, गाँधी दोनों प्रणालियों में मौजूद दोषों के बीच से एक रास्ता ढूंढने की कोशिश करते हैं। ट्रस्टीशिप सामाजिक अच्छाई को बढ़ावा देने के लिए निजी संपत्ति के प्रबंधन और स्वामित्व का एक मॉडल प्रदान करता है जो व्यक्तिगत पहल को बनाए रखते हुए दोनों प्रणाली की ज्यादतियों पर अंकुश लगाता है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों को एक नया अर्थ और परिप्रेक्ष्य मिलेगा।

गाँधी के विकास के मॉडल में उनकी विकेंद्रीकृत राजनीति की अवधारणा भी शामिल है जो उनकी पूरी योजना का एक आवश्यक हिस्सा है। उदारवादी और मार्क्सवादी दोनों राजनीतिक प्रणालियाँ दो प्रमुख दोषों से पीड़ित हैं। एक, राजनीतिक प्रतिनिधित्व की प्रणाली लोगों की लोकप्रिय इच्छा को प्रतिबिंबित करने में विफल रहती है। दो, उनके दावों के बावजूद कि प्रणाली जमीनी स्तर से सभी को लाभान्वित करता है, यह वास्तव में ऊपर से नीचे की ओर जाता है, इस प्रकार उनकी लोकतांत्रिक साख पर सवालिया निशान लग जाता है। इस प्रक्रिया में, जमीनी स्तर के लोग निर्णय लेने की प्रक्रिया में शायद ही कोई सार्थक भूमिका निभाते हैं। गाँधी आम आदमी के चौंपियन होने के कारण इन सीमाओं के प्रति सचेत थे। इसलिए, उन्होंने एक विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के साथ एक विकेंद्रीकृत राजनीति के लिए दृढ़ता से प्रयास किया। यह वास्तव में जमीनी स्तर पर के लोगों को सत्ता का नियंत्रण देगा। इस तरह के लोकप्रिय राजनीति में प्रत्यक्ष लोकतंत्र का डिजाइन केवल वयस्क मताधिकार और प्रत्यक्ष चुनावों के आधार पर सबसे निचली इकाई के स्तर पर कार्यात्मक था। हालाँकि, उच्च निकायों का चुनाव अप्रत्यक्ष प्रकृति का होगा जिसमें निचली इकाइयों के निर्वाचित प्रतिनिधि उच्चतर लोगों का चुनाव करेंगे। गाँधी को वास्तव में विश्वास था कि इस तरह की जन आधारित राजनीति, लोकतंत्र को अधिक से अधिक जवाबदेह बनाएगी। इसके अलावा, विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था पर आधारित उनके विकास मॉडल को ऐसे जन आधारित राजनीति द्वारा समर्थित किया जा सकता है, जिससे योजना-प्रक्रिया भी ऊपर से नीचे के बजाय नीचे से ऊपर की ओर होगी। इससे नौकरशाही की भूमिका को कम करने और विकास प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

आज दुनिया के अधिकांश समाज सामाजिक और धार्मिक विभाजन से घिरे हुए हैं जो विकास की राह में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक हैं। इसने बहुसांस्कृतिकवाद की एक नई अवधारणा को सामाजिक और धार्मिक विभाजन के लिए एक प्रतिवाद के रूप में उभरने और सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित किया है। हालांकि, ऐसा दृष्टिकोण गलत है और मुख्य रूप से सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व में विश्वास के बजाय सहिष्णुता की भावना पर आधारित है। यह स्पष्ट हो रहा है कि गाँधी की सर्व ध र्म समभाव (सभी धर्मों के लिए समान सम्मान) की अवधारणा विभिन्न धार्मिक समूहों और समुदायों के सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए एक बेहतर ढांचा प्रदान करती है। इस तरह के दृष्टिकोण की व्यापक और पूरी तरह से स्वीकार्यता यह सुनिश्चित करेगी कि समाज के बहुत से संसाधनों को लोगों के लिए बेहतर जीवन प्रदान करने की दिशा में मोड़ दिया जाए। संक्षेप में, गाँधी के धार्मिक और सांस्कृतिक वैश्विक दृष्टिकोण पर आधारित सामाजिक समरसता एक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के लिए एक समावेशी विकास सुनिश्चित कर सकती है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 5

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) गाँधी की विकास की अवधारणा क्या थी? समालोचना करें।

....

....

....

....

3.7 सारांश

गाँधी को इस अर्थ में एक भविष्यवादी कहा जा सकता है क्योंकि उन्हें विकास की प्रणाली की खामियों के बारे में पता था और उन्हें यह भी आभास था कि समाज में विभिन्न वर्गों के बीच धन के असमान वितरण के भविष्य में क्या परिणाम होंगे। आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने अभूतपूर्व प्रगति की है, पर अभी भी लाखों लोग गरीबी में जीवन व्यतीत करते हैं; बुनियादी मानव अधिकारों से उन्हें वंचित कर दिया जाता है, शक्तिशाली राष्ट्र शक्तिहीन देशों पर हावी हो जाते हैं और निर्दोष लोग आतंकवाद का शिकार हो जाते हैं। इस निराशाजनक स्थिति में गाँधीवादी दृष्टिकोण उपयोगी हो जाता है। गाँधी के दर्शन का मुख्य आधार मानवीय मूल्य हैं न कि बाजार द्वारा जीवन को नियंत्रित करना। लाखों गरीबों या दरिद्रों की सेवा अधिक महत्वपूर्ण है। गाँधी विकास का मानवीय पक्ष सामने रखते हैं। गाँधी का लक्ष्य है कि हम शरीर, मन और आत्मा के सतत विकास को संतुलित विकास कह सकते हैं। गाँधी ने महसूस किया था कि मानव विकास केवल भौतिक या आर्थिक नहीं है; इसे नैतिक होना चाहिए, इसे लोगों में समानता, स्वतंत्रता और प्रतिष्ठा के मूल्यों को स्थापित करने में सक्षम होना चाहिए; इसे अन्याय के खिलाफ लोगों को साहस प्रदान करना चाहिए। विकेंद्रीकरण, समुदाय आधारित अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भरता, हस्तशिल्प, ग्रामीण विकास और कम पूंजी वाले उपयुक्त प्रौद्योगिकी के उपयोग पर उनका जोर एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के लिए उनकी दृष्टि को दर्शाता है।

3.8 संदर्भ ग्रंथ

बुजुर्जियन, फ्रैंकियोज, 'क्राइम, वॉयलेंस एण्ड इनइक्विटेबल डेवलपमेंट', 1999 http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.201.8092&rep=rep1&type=pdf.

'इन्ट्रोडक्शन : व्हाट इज डेवलपमेंट', *ग्लोबलाइजेशन 101*, एन.डी., http://www.globalization101.org/introduction-what-is-development-2/.

जोजेफ, सिबी के., 'डेवलपमेंट डिस्कोर्स : मेंन्स्ट्रीम एण्ड गाँधीयन', *महात्मा गाँधीज राइटिंग एण्ड फिलोसफी*, 2013 http://www.mkgandhi.org/articles/development.html.

नमिता, नुति, 'गाँधीज विजन ऑफ डेपलपमेंट : रिलिवेंस फॉर 21स्ट सेंचुरी', *इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन,* वॉल्यूम-LX, नं.1, 2014 http://www.iipa.org.in/New%20Folder/9-Nuti.pdf.

पारेख, भीखू, *गाँधीज पॉलिटिकल फिलोसफी : ए क्रिटिकल इक्जामिनेशन*, अजन्ता पब्लिशंस, डेहली, फर्स्ट इण्डियन एडिशन, 1995

शाह, शेली, 'गाँधीयन पर्सपेक्टिव ऑन डेवलपमेंट एण्ड इट्स कंटेम्पररी रिलिवेंस', *सोशियोलॉजी डिस्कशन*, एन.डी., http://www.sociologydiscussion.com/science/gandhian-perspective-on-development-and-its-contemporary-relevance/664.

थक्कर, ऊषा, 'गाँधीयन पर्सपेक्टिव ऑफ डेवलपमेंट', *महात्मा गाँधीज राइटिंग्स एण्ड फिलोसफीज*, 2011 http://www.mkgandhi.org/articles/gandhian-perspective-of-development.html.

'द गाँधीयन मॉडल ऑफ डेवलपमेंट : ऐन आउटलाइन एण्ड ए क्रिटिक ऑफ द पॉलिसी रिजाइम (इंक्लूडिंग द न्यू इकोनॉमिक पॉलिसी)', एन.डी.http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/604/12/12_chapter6.pdf.

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

वाशमोर, सूर्यकांत, 'गाँधीज थौट्स ऑन डेवपलपमेंट : ए क्रिटिकल अप्रेजल', *टेलर एण्ड फ्रांसिस ऑनलाइन*, जुलाई 8, 2008

'व्हेन डेवलपमेंट बिकम्स ए कर्स : डिस्पलेसमेंट्स एण्ड डिस्ट्रॉयड लाइवलीहूड्स', *द कंवर्जेशंस*, अगस्त 8, 2016 http://theconversation.com/when-development-becomes-a-curse-displacements-and-destroyed-livelihoods-61817.

3.9 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) आपके जवाब से यह स्पष्ट होना चाहिए कि विकास केवल आर्थिक विकास नहीं होता। अन्य पहलुओं में सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण भी शामिल होते हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) असमानता के पहलू की व्याख्या की जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) विभिन्न स्रोतों जैसे कि जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत में कमी, ग्लोबल वार्मिंग, ध्रुवीय बर्फ का पिघलना, और समुद्र के स्तर का बढ़ना और अत्यधिक प्रदूषण की व्याख्या की जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

1) आपके उत्तर में स्थायी विकास और सकल घरेलू उत्पाद के बजाय सकल मानव सुख पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 5

1) गाँधी के वैकल्पिक समग्र विकास पैटर्न में दुनिया के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक विकास के एकीकरण पर ध्यान दिया गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY